ओ३म्

आर्य वन्दना

मूल्य ९ रूपये

हिमाचल प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

परोपकार

युग प्रवर्तक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

स्वामी जी ने बहुत से व्याख्यान दिये। अनेक शास्त्रार्थ किये, बीसीयों वादियों को जीता। सैंकड़ों जिज्ञासुओं को समझाया और भागवत खंडन की सैंकड़ों पुस्तकें बांटी, परन्तु अन्त को अपने निर्मल चित चन्द्र में उदासीनता की एक रेखा उभर आई। स्वामी दयानन्द जी ने अकाल पीड़ित प्राणियों के करूणक्रन्दन को अपने कानों सुना था। अवध आदि प्रान्तों में भ्रमण करके वहां दीनदुर्बल दुःखियों की हृदय विदारक दशा को अपनी आंखों से देखा था। विन्ध्याचल आदि प्रदेशों की यात्रा करते हुए कोल, भील और संथाल आदि भारत माता के पुत्रों को अमानुष अवस्था में अवलोकन किया था। उन्होंने क्षत्रियों को तेजोहीन क्षीण देहों को उनके ऐतिहासिक स्थानों में जाकर दृष्टिगोचर किया था। वैश्यों की अवस्था भी उनसे छिपी न थी। सत्यधर्म के सूर्य को साम्प्रदायिक राहु ने ग्रस लिया है, यह वे जानते ही थे। ईसाई धर्म की बढ़ती हुई बाढ़, जिस प्रकार अबोध ग्रामीण प्रजा को प्लावित किये जा रही है, यह उन्हें विदित हो ही गया था। मिथ्या संस्कारों का विषम विषैला कीड़ा, जातीय जीवन की जड़ों में किस प्रकार घुसा जाता है, यह उन्हें ज्ञात हो चुका था। वे यह भी जानते थे कि पश्चिमी विचार, पुरातन आर्य सभ्यता को, आर्य संस्कारों को, आर्य धर्म-कर्म को और रीति-नीति को किस प्रकार घुन के सदृश खोखला किये जा रहे हैं। इसी कारण उनके अन्तःकरण में ऊष्मा बढ़ गई थी, हृदय स्त्रोत से भूतदया का प्रबल प्रवाह प्रवाहित हो गया था। मस्तिष्क तन्तुजाल में एक विचित्र संचालन उत्पन्न हो गया था और काया में क्रियात्मक जीवन की एक अद्भुत उत्तेजना का प्रादुर्भाव हुआ था। किसी भी महान् कार्य का एकाकी सिद्ध करना सुगम नहीं। इसलिए सहायतार्थ स्वामी जी ने पहले आर्य जाति के सिर को हिलाया, ब्राह्मणों को जगाने में वे यत्नशील हुए। उन्होंने पण्डितों -पुरोहितों को बहुतेरा उकसाया, भड़काय, उत्तेजित किया प्रोत्साहन दिया, परन्तु ऋषि-मुनियों के बंशजों के, पुरातन आर्य सन्तानों के अंग इतने शिथिल हो गये थे, उनके मस्तकमज्जातन्तु इतने मंद पड़ गये थे कि उनमें गति उत्पन्न होने में ही न आई। उनके चित्त, कालचक्र की विचित्र पेचीली चाल से सचेत न हो सके। आगरा, ग्वालियर, जयपुर, पुष्कर और अजमेर आदि स्थानों में भ्रमण करते हुए उन्हें प्रत्यक्ष हो गया था कि ये पण्डित पुरोहित जन अपने पुरातन पुरूषों के पौरूष को खो चुके हैं। ये तो अब इतने असमर्थ हो गये हैं कि परोपकार के लिए एक साधारण सी सामयिक स्वार्थ श्रृंखला को तोड़ने का भी साहस नहीं करते। विरोध के घनघोर घटाटोप सहित निराश और हताश की महातमोमयी अमावस्या की रात्रि में उन्हें अति दूर पा आशा का एक टिमटिमाता हुआ दीपक दिखाई दिया और वह हरिद्वार के द्वादशवर्षीय कुम्भ पर साधु-सन्यासियों का सम्मिलन था। स्वामी जी के हृदय कमल में आशा की एक ऐसी सुगन्ध का उद्भव होना स्वाभाविक था कि साधु सन्यासी लोग घर-बार त्यागी हैं, विरक्त हैं, भिक्षामात्रोपजीवी होने से स्वार्थ-कीचड़ से पार पा गये हैं, ब्रह्मचिन्तन के कारण आत्मज्ञानी और समदृष्टि हैं, लोभ-मोह के बन्धन तोड़ बैठे हैं। यदि ये जागृत हो जाएं, सत्य के सहायक बन जाएं, भूतदया के प्रभाव से प्रभावित हो जाएं, परहित कामना से कटिबद्ध होकर कार्यक्षेत्र में उतर आयें तो आर्य सन्तान के सिर पर से दुःख-दरिद्र के दिन दूर होते देर न लगेगी। इसके भाग्य का पूर्ण चन्द्रमा, उन्नति के विशाल, विमल, नील-नभ में फिर से चमकने लग जाएगा। आर्य धर्म का प्रचार, आर्यावर्त में ही क्यों, देश-देशान्तरों में भी हो जाएगा। सर्वत्र ही आर्ष ग्रन्थों का पठन-पाठन प्रवृत हो जाएगा, परन्तु सारा बल लगाने पर भी वहां महा-मेले में एक भी सत्य का सहायक साधु-सन्यासी न मिला, हिमालय के चरणों में उन्होंने एक भी ऐसा यति न देखा जो बन्धु प्रेम से प्रेरित हुआ हो, जो पर पीड़ा के लिए अनुकम्पा भाव रखता हो। एक ब्रह्मज्ञानी कर्मवीर भी जागतिक हित की जोत जगाकर सब ठौर चांदना कर देता है, परन्तु वहां सैंकड़ों ब्रह्मज्ञान का अभिमान करने वालों में किंचित भी क्रिया-धर्म और पराक्रम न पाया। गंगा के निर्मल नीर के तीर पर एक भी भगवद् भक्ति और प्रजा-प्रेम की इकट्ठी माला जपता हुआ न मिला। वेष था, नाम था, आकृति थी, रंग था, परन्तु उस सारे मेले में वह आत्मा नहीं था। जो अनुभव करता, जो सत्य परायण होकर स्वामी जी का संगी-साथी बन जाता, उस समय सचमुच महाराज ने अपने आपको अकेला अनुभव किया।

—श्रीमद्दयानन्द प्रकाश

यह अंक डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल, सुन्दरनगर के सौजन्य से प्रकाशित किया गया तथा
आगामी अंक आर्य समाज मण्डी के सौजन्य से प्रकाशित किया जाएगा।

अंक : ६६वां विक्रमी सम्वत् २०६९ सृष्टि सम्वत् १९६०८५३११३ अप्रैल २०१३

आर्य पर्वों की सूची : विक्रम सम्वत् २०६९-७० तदनुसार सन् २०१३

क्र. सं.		पर्व का नाम	चन्द्र तिथि	अंग्रेजी दिनांक	वार
१.		लोहड़ी	पौष शुक्ल, २ वि. २०६६	13/01/2013	रविवार
२.		मकर–संक्रान्ति	पौष शुक्ल, ३ वि. २०६६	14/01/2013	सोमवार
३.		गणतन्त्र दिवस	पौष शुक्ल, १४ वि. २०६६	26/01/2013	शनिवार
४.		वसन्त–पंचमी	माघ शुक्ल, ५ वि. २०६६	15/02/2013	शुक्रवार
५.		सीताष्टमी	फाल्गुन कृष्ण, ८ वि. २०६६	5/03/2013	मंगलवार
६.	ऋषि–पर्व	महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव	फाल्गुन कृष्ण, १० वि. २०६६	7/03/2013	गुरुवार
७.	ज्योति–पर्व	शिवरात्रि (ऋषि बोधोत्सव)	फाल्गुन कृष्ण, १४ वि. २०६६	10/03/2013	रविवार
८.	वीर–पर्व	पं. लेखराम बलिदान दिवस	फाल्गुन शुक्ल, ३ वि. २०६६	14/03/2013	गुरुवार
९.	मिलन–पर्व	नवसंस्येष्टि (होली)	फाल्गुन पूर्णिमा, वि. २०६६	26/03/2013	मंगलवार
१०.		आर्य समाज स्थापना दिवस/ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा/नवसम्वत्सर/ उगाड़ी/गुड़ी पड़वा/चैती चांद	चैत्र शुल्क, १ वि. २०७०	11/04/2013	गुरुवार
११.		रामनवमी	चैत्र शुल्क, ६ वि. २०७०	19/04/2013	शुक्रवार
१२.		वैशाखी	चैत्र शुल्क, ४ वि. २०७०	13/04/2013	शनिवार
१३.		पं. गुरुदत्त विद्यार्थी जन्मदिवस	बैशाख शुक्ल, ३ वि. २०७०	13/05/2013	सोमवार
१४.		हरितृतीया (हरियाली तीज)	श्रावण शुक्ल, ३ वि. २०७०	9/08/2013	शुक्रवार
१५.	वेद–प्रचार	श्रावणी उपाकर्म–रक्षा बन्धन	श्रावण पूर्णिमा, वि. २०७०	20/08/2013	मंगलवार
१६.	समारोह	हैदराबाद सत्याग्रह दिवस	भाद्रपद कृष्ण, ४ वि. २०७०	24/08/2013	शनिवार
१७.		श्री कृष्णजन्माष्मी	भाद्रपद कृष्ण, ८ वि. २०७०	28/08/2013	बुधवार
१८.		विजय दशमी/दशहरा	आश्विन शुक्ल, १० वि. २०७०	13/10/2013	रविवार
१९.		स्वामी विरजानन्द दण्डी जन्म दिवस	आश्विन शुक्ल, १२ वि. २०७०	16/10/2013	बुधवार
२०.	क्षमा–पर्व	दीपावली (ऋषि निर्वाणोत्सव)	कार्तिक अमावस्या, वि. २०७०	3/11/2013	सोमवार
	बलिदान–पर्व	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	पौष कृष्ण ६, वि. २०७०	23/12/2013	सोमवार

नोट : देशी तिथियों में घट–बढ़ होने से पर्व तिथि में परिवर्तन हो सकता है।

–सत्यपाल भटनागर, महामन्त्री

"भूल सुधार"

मार्च, २०१३ का अंक श्रीमती विष्णु देवी माता श्री विक्रम महाजन मन्त्री आर्य समाज चम्बा की ओर से था। जब कि आर्य समाज चम्बा के सौजन्य से प्रकाशित लिखा गया। भूल के लिये आर्य वन्दना परिवार खेद प्रकट करता है तथा इस उदारता के लिये उनका धन्यवाद करता है।

–सम्पादक

मुख्य संरक्षक	: स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी महाराज, दयानन्द मठ, चम्बा मो. : 94180–12871
संरक्षक	: रोशन लाल बहल, पूर्व प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र0, मो. : 94180–71247
मुख्य परामर्शदाता	: सत्य प्रकाश मेहंदीरत्ता, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र. फोन : 01733.220060
परामर्शदाता	: रत्न लाल वैद्य, उप–प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र. मो. : 94184–60332
विधि सलाहकार	: प्रबोध चन्द सूद (एडवोकेट), आर्य समाज–कण्डाघाट मो. : 94180–20633
सम्पादक	: कृष्ण चन्द आर्य, महर्षि दयानन्द मार्ग, आर्य समाज, सुन्दरनगर (खरीहड़ी) मो. : 94182–79900
मुख्य प्रबन्ध–सम्पादक	: विनोद स्वरूप, कांगड़ा कालौनी, कनैड, सुन्दर नगर मो. : 94181–54988
प्रबन्ध–सम्पादक	: 1. सत्यपाल भटनागर, प्राचार्य, आर्य आदर्श विद्यालय, कुल्लू मो. : 94591–05378 2. मोहन सिंह आर्य, गांव चुरढ़, तह. सुन्दरनगर मो. : 98161–25501
सह–सम्पादक	: राजेन्द्र सूद, 106, ठाकुर भाता, लोअर बाजार, शिमला
कोषाध्यक्ष	: मनसा राम चौहान, आर्य समाज, अखाड़ा बाजार, कुल्लू
मुद्रक	: प्राईम प्रिंटिंग प्रैस, शहीद नरेश कुमार चौक, सुन्दर नगर, (हि. प्र.)
नोट	: लेखकीय विचारों से सम्पादकीय व प्रकाशकीय सहमति आवश्यक नहीं है।

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक कृष्ण चन्द आर्य ने हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए छपवाकर हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा, उपकार्यालय मण्डी से प्रकाशित किया।

सम्पादकीय

दयानन्द मठ घण्डरां, तहसील इन्दौरा के १७वें वार्षिक उत्सव पर मैं धर्म पत्नी श्रीमती महेन्द्री आर्या, आर्य वन्दना के वरिष्ठ प्रबन्ध सम्पादक श्री मोहन सिंह, योग गुरू बाबा रामदेव के शिष्य श्री माया राम के साथ २२ मार्च २०१३ को सांय ५ बजे दयानन्द मठ घण्डरां पहुँचे। इस विशालकाय मठ और उसकी सुन्दरता को निहारने मात्र से रास्ते की थकान दूर हो गई। वसन्त ऋतु में फूलों की बहार को देखकर सभी का चित शान्त और आनन्दित हुआ। इस उत्सव में यतिमण्डल के महामन्त्री पूज्य स्वामी शोभानन्द जी, पंजाब प्रतिनिधि सभा के वेद प्रचारक श्री नारायण सिंह जी के उपदेशों तथा आर्य समाज नूरपुर के पुरोहित तथा भजनोपदेशक श्री सुरेश कुमार शास्त्री द्वारा सुन्दर प्रवचन और भजनों की अमृतवर्षा हुई। २४ मार्च को यज्ञ की पूर्णाहूति के उपरान्त दयानन्द मठ दीनानगर के संस्थापक स्वामी सदानन्द जी की अध्यक्षता में भजन एवं प्रवचनों की पावन गंगा की पवित्र धारा में सबने डुबकी लगाकर प्रभु भक्ति के अमृतरस का पान किया। इस अवसर पर स्वामी शोभानन्द जी द्वारा अति सुन्दर सारगर्भित संक्षिप्त उपदेश दिया। सभी वक्ताओं द्वारा लौह पुरुष स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी के सुयोग्य शिष्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के ११३वें जन्म दिवस पर उनकी देशभक्ति, गौ सेवा और असहायों की सहायता पर प्रकाश डाला।

स्वामी सदानन्द जी महाराज ने बताया इस मठ की स्थापना करने हेतु मैं गुरूदेव स्वामी सर्वानन्द जी के साथ एक आम के वृक्ष के नीचे बैठा था। यहाँ के निवासी श्री हाशिम–दीन द्वारा मठ की स्थापना के लिये भूमि दान रूप में दी। स्वर्गीय चौधरी रसीला राम जी ने भी उतनी ही भूमि इस मठ के विकास एवं प्रचार–प्रसार हेतु स्वामी सर्वानन्द जी को दान दी, जहाँ आज यह सुन्दर मठ दिखाई देता है। यह हिन्दू–मुस्लिम भाईचारे का एक पवित्र स्थान बन गया है। वास्तव में स्वामी सदानन्द जी के अनुसार महर्षि दयानन्द ने संसार का उपकार करना ही इस समाज का मुख्य उद्देश्य माना है, तो फिर साम्प्रदायिकता, छुआछूत, जात–पात की बात कहां रह जाती है ? वास्तव में विश्व का संविधान आर्य समाज के दस नियमों में ही समाहित है। आर्य जन हिन्दू–मुस्लिम भाईचारे के प्रबल पहरेदार श्री हाशिमद्दीन और चौधरी रसील राम जी को सदा और सर्वदा उनके समाज सेवा हेतु की गई कुर्बानी की भावना को अपने स्मृति पटल से ओझल नहीं होनें देंगे। इस मठ के संचालक स्वामी सन्तोषानन्द जी का जीवन प्रेरणामय है। ये सन्तोष, शान्ति और स्नेह की सजीव मूर्ति हैं। उनके जीवन में झांक कर देखने में भी दूर तक अशान्ति और असंतोष के चिन्ह कहीं भी नहीं दिखलाई देते। छल–कपट उनसे कोसों दूर हैं। अपने शिष्यों सहित, गौ सेवा भी करते रहते हैं। पं. हरिश्चन्द भजनोपदेश भी इनके कार्य में भरपूर सहयोग देते हैं जो अति उत्तम कार्य है। आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रदेशाध्यक्ष श्री सत्य प्रकाश मेहन्दीरत्ता जी शारीरिक अस्वस्थता के कारण मठ नहीं पधार सके। सभा के पूर्व प्रधान स्वामी सुमेधानंद जी महाराज बहुत समय पूर्व यदा–कदा मठ में पधारते रहे हैं। दयानन्द मठ घण्डराँ जाति–पाति साम्प्रदायिकता के संकुचित भाव से उपर उठकर एक मानवतावादी सोच का उदाहरण देकर ऋषिवर दयानन्द के इस स्वप्न को साकार करता है कि हमें भातृभाव का प्रचार, प्रसार करते हुये धर्म की बेल को सदा हरा रखना है। इस मठ में प्रतिदिन हवन होता है। विद्यार्थियों के लिये निःशुल्क भोजन, आवास और शिक्षा की व्यवस्था है। गौ–शाला के अतिरिक्त सुन्दर यज्ञशाला है जहां वैदिक विचारधारा का प्रचार–प्रसार होता है। हर वर्ष यहाँ स्वामी सन्तोषानन्द जी आंखों का निःशुल्क शिविर का आयोजन करते हैं। दयानन्द मठ के संचालक स्वामी सदानन्द जी द्वारा इस आश्रम के उत्थान हेतु विशेष सहयोग और मार्गदर्शन दिया जाता है। इस वर्ष के उत्सव में आश्रम की गतिविधियों से प्रेरित होकर श्रीमती महेन्द्री आर्या, सुन्दरनगर ने इस मठ में सहयोग हेतु एक लाख रुपये की सहयोग राशि देने की घोषणा की है। सर्वे भवन्तु सुखिनः की विचारधारा का प्रसार ऋषिवर दयानन्द और उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज कर रहा है। ऋषिवर अपने जीवन काल में सत्य सनातन वैदिक धर्म का राग अलापते रहे। वेदों की ओर लौटने का नारा उन्होंने विश्व में जन–जन तक पहुँचाया। धर्म के नाम पर पाप, पाखण्ड और अन्याय, अत्याचार तथा आडम्बरों का तर्कों तथा तथ्यों से उत्तर दिया।

ऋषिवर दयानन्द के सन्देश को जन–जन तक पहुंचाने के लिए लौह पुरूष स्वामी स्वतन्त्रानन्द के सुयोग्य शिष्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज करते रहे हैं। उनके दिवंगत होने के उपरांत अब दयानन्द मठ के संचालक स्वामी सदानन्द जी और स्वामी सन्तोषानन्द जी यह कार्य कुशलतापूर्वक कर रहे हैं।

–कृष्ण चंद आर्य

ईश्वर सिद्धि सम्बन्धी मन्तव्य और मैं

♦अभिमन्यु कुमार खुल्लर, जीवाजीगंज, लश्कर, ग्वालियर (म० प्र०)

अमेरिका प्रवास में एक आत्मीय ने कहा– आर्य समाज और ईश्वर को अपने पास ही रखिए। अंग्रेज़ी की एक पुस्तक देते हुए कहा–इसे पढ़िए। आपको मालूम हो जावेगा कि मनुष्य का मस्तिष्क किस प्रकार काम करता है। एक ही बात दोहराते रहिए। मस्तिष्क में उस बात की ध्वनि–प्रतिध्वनि होती रहेगी। यदि ओ३म् का उच्चारण बारम्बार करते रहेंगे तो आपको लगेगा कि आप और ओ३म् एकाकार हो गये हैं। तत्काल एक विचार मस्तिष्क में कौंध गया कि महर्षि भी प्रणव का एक हजार बार जाप करने का आदेश करते थे। पुस्तक पढ़ने की हिम्मत ही नहीं हुई इस भय से कि कहीं ईश्वर विश्वास की चूलें ही न हिल जायें। ईश्वर पर विश्वास का आधार क्या है ? जब हम उसे निराकार, सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापक स्वीकार कर चुके हैं तो संकट पड़ने पर हमारा उस पर से विश्वास क्यों हिल जाता है ? इसके अतिरिक्त यह विचार भी जड़ पकड़ रहा था कि ईश्वर को मानने वाले क्या उसे जान–समझकर ही मानते हैं अथवा विरासत में मिले संस्कारों के कारण मानते हैं और पूजते हैं। ये प्रश्न मन–मस्तिष्क को उद्वेलित करने लगे। संकट तो गहरा हो चुका था। चिन्ता तो लग चुकी थी।

ईश्वर सिद्धि विषयक साहित्य पढ़ने लगा। पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय का ग्रन्थ 'आस्तिकवाद' स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती का Man and his Religion महर्षि के पूना प्रवचन (प्रथम प्रवचन ईश्वर सिद्धि पर दिया गया है।), शास्त्रार्थ महारथी द्वय पं० रामचन्द्र देहलवी और पं० गणपति शर्मा के शास्त्रार्थ, सत्यार्थ प्रकाश का सप्तम् सम्मुल्लास। सप्तम् सम्मुल्लास का एक ही प्रश्नोत्तर मेरी समस्या के अनुरूप लगा। सुलभ सन्दर्भ के लिए यथावत् यहां उदधृत कर रहा हूँ :

प्रश्न–आप ईश्वर, ईश्वर कहते हो परन्तु उसकी सिद्धि किस प्रकार करते हो ?

उत्तर–सब प्रत्यक्षादि प्रमाणों से।

प्रश्न–ईश्वर में प्रत्यक्षादि प्रमाण कभी नहीं घट सकते।

उत्तर–गौतम महर्षि कृत न्यायदर्शन के सूत्र के अनुसार जो श्रोत्र, त्वचा, चक्षु, जिव्हा, घ्राण, और मन का शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, सुख–दुःख, सत्यासत्य विषयों के साथ सम्बन्ध होने से ज्ञान उत्पन्न होता है। उसको प्रत्यक्ष कहते हैं परन्तु वह निर्भ्रम हो।

अब विचारना चाहिए कि, इन्द्रियाँ और मन से "गुणों" का प्रत्यक्ष होता है 'गुणी' का नहीं। जैसे चारों त्वचा आदि इन्द्रियों से स्पर्श, रूप, रस और गंध का ज्ञान होने से गुणी जो पृथ्वी है, उसका आत्मायुक्त मन से प्रत्यक्ष किया जाता है वैसे इस "प्रत्यक्ष सृष्टि" में रचना विशेषादि ज्ञानादि गुणों के प्रत्यक्ष होने से परमेश्वर का भी प्रत्यक्ष है।

और जब आत्मा और मन इन्द्रियों को किसी विषय में लगाता व चोरी आदि बुरी व परोपकार आदि अच्छी बात के करने का जिस क्षण में आरम्भ करता है, उस समय जीव की इच्छा, ज्ञानादि उसी इच्छित विषय पर झुक जाता है। उसी क्षण में आत्मा के भीतर से बुरे काम करने में, भय, शंका और लज्जा तथा अच्छे कामों के करने में अभय, निःशंकता और आनन्दोत्सव उठता है। वह जीवात्मा की ओर से नहीं परमात्मा की ओर से है।

क्या सटीक तराजू दी है महर्षि ने। क्या इसको कोई झूठला सकता है ?

पूना में दिया गया प्रथम प्रवचन ईश्वर सिद्धि विषयक था। इसमें भी महर्षि ने सृष्टि रचना का उदाहरण देकर ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध किया।

.... ईश्वर = परम पुरूष = सनातन ब्रह्म सब पदार्थों का बीज है। रचना रूपी कार्य दिखता है। इस पर से अनुमान होता है कि, इस सृष्टि को रचने वाला अवश्य कोई है। पंचभूतों की सृष्टि आप ही आप रची हुई नहीं है क्योंकि घर का सामान विद्यमान होने से ही घर नहीं बन जाता, यह हमारा देखा हुआ अनुभव सर्वत्र है। साथ ही साथ पंचभूतों का मिश्रण नियमित परिमाण से विशिष्ट कार्य उत्पन्न होने की ही सुगमता के लिये कभी भी आप स्वयं घटित नहीं होता। इससे स्पष्ट है कि, सृष्टि की व्यवस्था जो हम देखते हैं उसका उत्पादक और नियन्ता ऐसा कोई 'श्रेष्ठ पुरूष' अवश्य होना चाहिए।...

प्रत्यक्ष रीति से 'गुण' का ज्ञान होता है। गुण का अधिकरण जो 'गुणी' द्रव्य है, उसका ज्ञान प्रत्यक्ष रीति से नहीं होता। इसी प्रकार ईश्वर सम्बन्धी गुण का ज्ञान चेतन और अचेतन सृष्टि द्वारा प्रत्यक्ष होता है। इसी पर से ईश्वर संबंधी 'गुण' का अधिकरण जो ईश्वर है, उसका ज्ञान होता है, ऐसा समझना चाहिए। इसे स्पष्ट करने के लिए ऋग्वेद का मंत्र बोला–

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
सदाधार पृथ्वी द्यामुतेमां, कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय अपने सुप्रसिद्ध ग्रंथ "आस्तिकवाद" में ईश्वर सिद्धि के लिए विश्व के समस्त मानव समुदाय में 'धर्मभाव' या 'आस्तिकता' अर्थात् अपने से उच्चतर शक्ति में विश्वास निरूपित करते हैं। उपाध्याय जी के सुपुत्र अन्तर्राष्ट्रीय

ख्याति प्राप्त विद्वान् स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती एवं आनन्द स्वामी जी महाराज ईश्वर की सर्वोत्तम कृति मानव शरीर रचना की विशद व्याख्या कर ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करते हैं। शास्त्रार्थ महारथी द्वय पंडित रामचन्द्र देहलवी पं० गणपति शर्मा सृष्टि रचना का उदाहरण देकर ईश्वर के अस्तित्व को समझाते हैं।

भौतिकी के वैज्ञानिक लगभग ५० वर्ष से ब्रह्माण्ड की संरचना के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रयासरत हैं। सर्न वेधशाला में चल रहे प्रयोगों से एक कारक परमाणु का पता चला है जो हवा में तैरते हुए परमाणुओं को घनत्व–ठोस रूप प्रदान करता है। वैज्ञानिकों का मानना है कि 'बिग बैंग' के बाद सभी परमाणु उड़ते रहे होंगे। इसी सर्जक परमाणु ने उनमें प्रवेश कर पृथ्वी,, सूर्य, चन्द्रादि ग्रह–नक्षत्रों का निर्माण किया होगा। अतः यही परमाणु कण जिसे वह 'गॉड पार्टिकल' कहते हैं, विधाता है। सर्वप्रथम ब्रिटिश वैज्ञानिक पीटर हिग्स ने इस तथ्य की घोषणा १९६५ में की। भारतीय वैज्ञानिक केशवचन्द्र बोस ने इस सिद्धान्त का समर्थन किया। इसलिये इसे हिग्स–बोसन सिद्धान्त कहते हैं।

आर्य पत्र–पत्रिकाओं में प्रो० स्वतंत्र कुमार (आर्य–मर्यादा २६–२६ जुलाई २०१२), आचार्य राधामोहन उपाध्याय (आर्य संसार–सितम्बर १२) श्री हरिश्चन्द्र वर्मा वैदिक (आर्य जगत १६–२२ सितम्बर १२) के लेख प्रकाशित हुए है। निश्चित रूप से वैदिक विद्वान् स्थूल–अणु–परमाणु को सृष्टि रचयिता स्वीकार नहीं कर सकते। कारण स्पष्ट है कि रचना के लिए सचेतन की आवश्यकता होती है। वैज्ञानिकों के अन्वेषण–परीक्षण अभी चल रहे हैं।

अपने लेख में प्रो० स्वतंत्र कुमार ने ब्रह्म को इस प्रकार निरूपित किया है–"सर्वव्यापी तन्तु सचेतन ऊर्जा"। सचेतन, निराकार, सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापक ब्रह्म को समझानेवाली यह परिभाषा मेरे मन–मस्तिष्क पर छा गई। 'परम पुरुष', 'परमात्मा' आदि विशेषणों से अधिक स्पष्ट लगी। महात्मा नारायण स्वामी महाराज ने भी इस बात को और स्पष्ट किया। उन्होंने ब्रह्माण्ड रचना के असंख्य नियमों को 'ऋत', 'तन्तु' बताया है। ये सार्वभौमिक और सार्वकालिक नियम ही उस सचेतन शक्ति के परिचायक हैं।

इस दार्शनिक विवेचन के परिपेक्ष्य में यह उल्लेखनीय है कि, ईश्वर के अस्तित्व के संबंध में महर्षि दयानन्द के समक्ष कोई समस्या उत्पन्न नहीं हुई थी। उनके समक्ष यह प्रश्न उपस्थित हुआ था कि मूर्ति ईश्वर है अथवा मूर्ति में ईश्वर है या नहीं। यह प्रश्न उठा विदवत्वर पं० गुरुदत्त विद्यार्थी एवं मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) के समक्ष। यह कहना यथार्थ नहीं कि महर्षि के प्रयाण के दृश्य ने नास्तिक गुरुदत्त को आस्तिक बना दिया। १९ वर्षीय पं० गुरुदत्त विद्यार्थी आर्यसमाज लाहौर के सभासद थे और आर्य समाज लाहौर के उपप्रधान लाला जीवनदास के साथ महर्षि की दारूण रूग्णावस्था का समाचार पाकर अजमेर भेजे गये थे। क्या उस युग में एक नास्तिक आर्यसमाज का सभासद हो सकता था ? तथ्य यह है कि उस समय उनकी मानसिक स्थिति 'संशयवादी' की थी। संशयवादी अर्थात् ईश्वर का अस्तित्व है अथवा नहीं, इसका उन्हें निश्चय नहीं हुआ था। रही बात मुंशीरामजी (स्वामी श्रद्धानन्द) की तो उनका महर्षि दयानन्द से बरेलीवाला वार्तालाप स्मरण कीजिये। मुंशीराम ने कहा था कि आपने (स्वामी दयानन्द) मुझे तर्कों से तो पराजित कर दिया लेकिन ईश्वर पर विश्वास नहीं दिलाया। महर्षि ने उत्तर दिया–तुमने प्रश्न पूछे, मैंनें तुम्हें उत्तर दिये। मैंने कब कहा था कि मैं तुम्हें ईश्वर पर विश्वास दिला दूंगा। ईश्वर पर विश्वास तो तुम्हें तब होगा जब तुम्हारे ऊपर ईश्वर की कृपा होगी। महर्षि के इस कथन से स्फटिक की तरह स्पष्ट है कि ईश्वर पर विश्वास के लिये ईश्वर की कृपा की अत्यन्त आवश्यकता है। क्या नासमझ को या ईश्वर को जाने बिना मानने वाले पर ईश्वर की कृपा हो सकती है ? यदि इस तथ्य को भी स्वीकार कर लें कि ईश्वर अपनी कृपा दिखाने में भेदभाव नहीं करता तो भी यह निर्विवाद रूप से स्पष्ट रहेगा कि वे (नासमझ, जाने बिना मानने वाले) उस कृपा को समझ ही नहीं पायेंगे। और न उससे आत्मोन्नति के मार्ग में लाभान्वित हो सकेंगे।

काफी लम्बे समय के पश्चात् मुंशीराम पर ईश्वर की कृपा हुई। शराब के नशे में दुत्त मुंशीराम अपने एक मित्र के घर पहुँचे। फिर शराब का दौर चला। थोड़ी देर में मित्र उठकर घर के अन्दर चला गया। कुछ देर बाद किसी नारी का आर्तनाद सुनकर मुंशीराम अन्दर गये। देखते हैं कि एक अबला मित्र के हाथों में छटपटा रही है। मुंशीराम ने अपने नराधम मित्र को दोनों हाथ पकड़ कर धकेल दिया। और वह नारी उसके पंजे से छूटकर अंदर भागी। स्वामी श्रद्धानन्द अपनी आत्मकथा 'कल्याणमार्ग का पथिक' में लिखते है उस समय मेरे नेत्रों के समक्ष पत्नी शिवदेवी और महर्षि दयानन्द उपस्थित हो गये। महर्षि ने कहा–मुंशीराम! क्या अब भी परमेश्वर पर तेरा विश्वास न होगा ? अर्थात् किस अदृश्य शक्ति ने घोर रात्रि के बीच इस अबला नारी का सतीत्व बचाने के लिये तुझे भेजा ? महर्षि का स्पष्ट आशय यही था कि ईश्वरीय प्रेरणा से ही तुम यहां उपस्थित हुये। प्रभु अपने अस्तित्व को इसी तरह सिद्ध करता है।

रही गुरुदत्त की बात। मिल आदि पाश्चात्य

दार्शनिकों के ग्रंथों का प्रणयन करने के पश्चात उनकी वृत्ति संशयात्मक हो गई थी–ईश्वर है अथवा नहीं हैं ? अजमेर पहुंचने पर महर्षि को मृत्युशैय्या पर लेटे हुये देखा। रात्रि भर वे डॉ. लक्ष्मणदास के साथ महर्षि की शैय्या के समीप बैठे रहे। डॉ. लक्ष्मणदास के अनुरोध पर अजमेर के सिविल सर्जन डॉ. न्यूमेन को बुलाया गया। वे महाराज पर रोग के प्रचण्ड आक्रमण किन्तु रोगी की अनन्य, अतिमानवीय सहनशीलता को देखकर स्तम्भित रह गये। उन्हें अतीव आश्चर्य हुआ कि इस भीषण स्थिति में भी कोई रोगी ऐसी दारूण वेदना को असीम धैयेपूर्वक सहन कर सकता है!!!

गुरूदत्त टकटकी बांधे महर्षि के महाप्रयाण को देख रहे हैं। पूरे शरीर में फफौले निकल रहे हैं। गले के अन्दर तक फफौले पड़ गये है और बार–बार शौच जा रहे हैं। पेट में भयंकर पीड़ा हो रही है और महर्षि पूर्णतया शांत। न कोई आह, न कोई ऊह। गुरूदत्त के मन में विचार बार–बार कौंध रहा था कि कौनसी अदृश्य शक्ति इस भीषण अवस्था में महर्षि को मन व इन्द्रियों पर अटूट नियंत्रण की शक्ति प्रदान कर रही थी। ऐसा प्रयाण निष्णात् योगी, ईश्वर के परम विश्वासी का ही हो सकता है। सदैव के लिये ईश्वर के संबंध में संशय की स्थिति समाप्त हो गई। ईश्वर की सत्ता पर पूर्ण विश्वास हो गया। जान लिया कि ईश्वर क्या है। उपरोक्त दोनों उदाहरणों से स्पष्ट है ईश्वर पर विश्वास ईश्वर की कृपा से ही संभव है। ईश्वर कृपा किस तरह करता है, यह प्रत्येक व्यक्ति के लिए पृथक हो सकता है। राजा भोज के लिए भेजे गये हत्यारों के हृदय में मासूम, निरपराध भोज की हत्या न करने की प्रेरणा देकर। सब ओर से निराश, हताश, परिवार की भोजन व्यवस्था करने में भी असमर्थ महाराणा प्रताप के समक्ष यकायक 'भामाशाह को उपस्थित कर' लौटते हुए महाराणा प्रताप की हत्या करने के लिए पीछा करते हुए मुगल सैनिकों का विद्रोही भाई शक्तिसिंह से वध कराकर।

वेद मर्मज्ञ, आचार्य प्रवर शिवनारायण उपाध्याय (कोटा) ने इस विषय में एक भिन्न संदर्भ में मुझे लिखा–''ईश्वर पर विश्वास केवल तर्कपूर्ण भाषा में उसकी सिद्धि करने मात्र से नहीं हो जाता। उसके लिए जीवन में घटने वाली आश्चर्यजनक घटनाओं का बड़ा हाथ होता है। मैने स्वयं जीवन में अनुभव किया है कि किस प्रकार वह हमेशा हमारी सहायता के लिए उपस्थित रहता है। वास्तव में प्रयत्न करके आप उसे नहीं जान सकते।'' यथार्थ में हम सब भी अपने–अपने जीवन में इस वास्तविकता से परिचित होते हैं।

प्रारम्भ से लेकर अब तक इस लेख में मैंने ब्रह्म को, ईश्वर को जानने समझने की अपने मन–मस्तिष्क की प्रक्रिया को दर्शाया है। गुणीजन, सुधीजन को यह सब विवरण जाना पहचाना समझा हुआ लगे पर मैं कब उनके लिए लिखता हूं। मेरा लेखन तो स्वयं मुझ जैसे सामान्य बुद्धिवालों के लिए है जो विद्वानों की दुरूह शब्दावली से कुछ समझ ही नहीं पाते। मुझे इस सम्पूर्ण प्रक्रिया में से निकलने पर शान्ति मिली है। मेरा मनोबल, आत्मविश्वास बढ़ा है।

पर प्रश्न खड़ा है–ईश्वर को समझने, जानने, मानने वाले का जीवन कैसा होना चाहिए। महर्षि बारम्बार 'दुरितानि परासुव' क्यों कहते हैं। इस पर विचार करने से पूर्व मैं देखता हूं–ईश्वर को जाना–माना महर्षि दयानन्द ने। उनसे प्रेरणा पाकर जाना–माना पंडित लेखराम, पं० गुरूदत्त विद्यार्थी और स्वामी श्रद्धानन्द ने। न केवल इन लोगों की ही काया पलट गई बल्कि जनमानस की भी काया पलटने की सामर्थ्य परमपिता परमात्मा से प्राप्त की। मेरी अल्पमति में स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज इसी श्रेणी में परिगणित किए जा सकते हैं। अन्य अनेक विद्वान् एवं संन्यासी भी इसी श्रेणी की पात्रता रखते होंगे। उनका मूल्यांकन करने की भी योग्यता मुझमें नहीं है। मैने तो स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज को छोड़कर उन्हीं दिवंगतों का नाम लिया है जिन्होंने महर्षि दयानन्द के समान ही सर्वस्व न्यौछावर कर उन्हीं जैसी गति पाई।

प्रश्न आज के वैदिक धर्मियों का है जो ईश्वर के इस स्वरूप को जानने व मानने का दावा करते हैं। सम्पूर्ण विश्व में इनकी संख्या लगभग ५०–७५ लाख होगी। यह विशाल जनसंख्या सम्पूर्ण विश्व का चारित्रिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य बदलने के लिए पर्याप्त है। पर यह जन क्या दावा कर सकते हैं कि भ्रष्टाचार, अनैतिकता, कर्त्तव्य निर्वहन के प्रति निष्ठा का अभाव उनमें नहीं है। परिवार में एक दूसरे के प्रति प्रेम आदर का भाव है। कन्या भ्रूण हत्या के दोषी नहीं हैं। पारिवारिक झगड़े और मुकदमेबाजी नहीं हैं। यदि ये सब बाते हैं तो 'कृण्वन्तो विश्मार्यम' का नारा लगाना कोरी गलेबाजी नहीं तो क्या है ? यदि सम्पूर्ण अर्थ में 'आर्य'–श्रेष्ठ नहीं बन सकते तो कुछ गुण ही अपना लीजिये। समाज में आप अलग दिखेंगे। वे गुण आपको वैशिष्ट्य प्रदान करेंगे। आप श्रद्धा व प्रीति का पात्र बनेंगे। लेकिन हम आज देखते हैं कि इनमें से एक बड़ा वर्ग आर्यसमाज को ही रसातल पर पहुंचाने के लिए कटिबद्ध है। यह वर्ग वैदिक धर्मी है ही नहीं। इस वर्ग का प्रवेश आर्यसमाज के नेतृत्व की अदूरदर्शिता का परिणाम है। महर्षि दयादन्द ने आर्यसमाज स्थापित किया था अपनी विरासत को सहेजने, सम्हालने व वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार को तीव्र गति प्रदान करने के लिए। यह तो हुआ ही नहीं, हम महर्षि को ही घोल कर पी गए।

''अभी कुछ लोग बाकी हैं जहां में''

होली का त्यौहार रंग, अबीर और गुलाल का त्यौहार है जो हमें अपने समस्त विद्वेष भुला कर परस्पर प्रेम और सद्भावना का संदेश देता है। इस पर्व पर हम अपने पाठकों को होली की बधाई देते हुए ईमानदारी–सद्भावना की कुछ सच्ची घटनाएं बता रहे हैं। ये घटनाएं साक्षी हैं कि आज भी अपनी ईमानदारी से दूसरों के जीवन में खुशियों के इंद्रधनुषी रंग भरने वाले लोग इस देश में मौजूद हैं :

*१८ जून २०११ : बंगाल के नवाद्वीप शहर में रिक्शा चला कर अपनी पत्नी व बेटी का पेट पालने वाले ६२ वार्षीय मनोरंजन महंत को सड़क पर पड़ी ५०,००० रुपयों की ५–५ सौ रुपए के नोटों की एक गड्डी नजर आई। इतनी बड़ी रकम देख कर भी बूढ़े रिक्शा चालक का मन नहीं डोला और उसने वह रकम थाने में जमा करवा दी। पुलिस वालों ने उसे मीडिया से मिलवाया तो उसने कहा, ''मुझे यह एहसास है कि जिस व्यक्ति के ये रुपए गुम हुए होंगे उस पर क्या बीत रही होगी।''

*१३ सितम्बर : अहमदाबाद के निकटवर्ती अम्बावाड़ी में जयपुर का एक जौहरी एक ऑटो चालक मोहम्मद अंसारी के आटो में जल्दबाजी में अपना बैग भूल गया जिसमें २० लाख रुपए के हीरे थे। इसका पता लगने पर अंसारी ने बैग के मालिक को ढूंढा और अमानत उसे लौटाई।

*२१ जनवरी २०१२ : बंगाल के मालदा रेलवे स्टेशन पर विधवा स्वीपर सीमा राय को एक रेलवे यार्ड में खड़ी एक रेलगाड़ी के डिब्बों की सफाई करते हुए वहां एक लावारिस बैग पड़ा मिला। उस बैग में पूरे २३ लाख रुपए थे। सीमा ने यह रकम अपने उच्चाधिकारियों को सौंप दी।

*१ अप्रैल : गाजियाबाद में रिक्शा चलाने वाले बिहार के एक रिक्शा चालक राम प्रकाश ने सिकरी के मंदिर में भगवान के दर्शनों को आई एक महिला कृष्णा देवी तथा उसके बच्चों को उनके घर तक छोड़ने के लिए रिक्शा में बिठाया।

कृष्णा देवी ने उतरते समय हड़बड़ी में अपना पर्स रिक्शा में ही छोड़ दिया जिसमें २५,००० रुपए व सोने की एक अंगूठी थी। दूसरी सवारी की खोज में भटकते राम प्रकाश को अपने रिक्शा के पायदान में वह पर्स गिरा हुआ नजर आया तो वह उसी क्षण वापस आया और कृष्णा देवी की अमानत लौटा दी।

*११ अप्रैल : दक्षिण भारत के तिरुवनंतपुरम में एमरजैंसी एम्बुलैंस सेवा '१०८' के २ कर्मचारी रागेश और अभि लाल सड़क दुर्घटना में घायल एक व्यक्ति को अपनी गाड़ी में डाल कर अस्पताल ले कर गए। जब वे खून से सनी एम्बुलैंस की सफाई कर रहे थे तो उन्हें अंदर एक थैले में पड़े १,०५,००० रुपए मिले। वे दोनों तुरंत वापस गए और उन्होंने यह रकम घायल व्यक्ति के बेटे को लौटा दी।

*१८ नवम्बर : चेन्नई में हुसैन शरीफ नामक आटो चालक के आटो में कहीं जा रहा एक व्यक्ति उतरते समय जल्दी में अपना बैग आटो में ही छोड़ गया जिसमें एक लैपटॉप के अलावा हस्ताक्षर की हुई दो खाली चैक बुकें भी थी। हुसैन ने पता लगाकर उसके मालिक को उसकी अमानत सौंपी।

*४ मार्च २०१३ : बंगाल में मुर्शिदाबाद जिले के लाल गोला गांव में एक युवती को किसी अज्ञात व्यक्ति का भेजा हुआ कोरियर मिला और जब उसने उसे खोला तो कोरियर में उस युवती का वह पर्स निकला जो कुछ दिन पूर्व एक जेबकतरे ने चुरा लिया था।

इसमें उसका ए.टी.एम. कार्ड, वोटर कार्ड और पैन कार्ड था। पैकेट में एक पत्र भी जिसमें जेबकतरे ने लिखा था, ''मैंने तुम्हारा पर्स चुराया था पर अब इसे वापस भेज रहा हूँ क्योंकि इसमें तुम्हारे कीमती दस्तावेज थे। मैंने कोरियर भेजने पर ५० रुपए खर्च किए हैं जो अगली 'मुलाकात' में तुमसे ले लूंगा।''

*११ मार्च : महाराष्ट्र में ठाणे की रहने वाली प्रिया प्रकाश सावंत नामक युवती को रेलगाड़ी में यात्रा करते समय एक थैला मिला जिसमें एक लाख रुपए थे। उसने वह राशि ठाणे के स्टेशन मास्टर के हवाले कर दी।

*२० मार्च : नई दिल्ली हवाई अड्डे पर टर्मिनल १–डी के टायलैट में एक कर्मचारी को एक लावारिस पैकेट मिला। उसने इसे स्वयं खोलने की बजाय सी.आई.एस.एफ. के अधिकारियों को सूचित किया और जब वह पैकेट खोला गया तो उसमें से ३० लाख रुपए मूल्य के सोने के ७ बिस्कुट निकले जिन्हें उन्होंने हवाई अड्डे के प्रबंधन को सौंप कर अपनी ईमानदारी का प्रमाण दिया।

ये समाज के निर्धन वर्ग से सम्बन्ध रखने वाले वे सत्यनिष्ठ लोग हैं जिन्होंने धन की आवश्यकता होने के बावजूद ईमानदारी का दामन नहीं छोड़ा जबकि दूसरी ओर वे अमीर लोग नेता, मंत्री और राजनीतिज्ञ हैं जो वेतन और भत्तों के रूप में लाखों रुपए प्राप्त करने के बावजूद अरबों रुपए के घोटाले करके इस देश को लूट रहे हैं। इन अमीरों से तो वे गरीब कहीं अच्छे व साधुवाद के पात्र हैं जो अपनी ईमानदारी से लोगों के जीवन में खुशियों के रंग भर रहे हैं।

सौजन्य : पंजाब केसरी (सम्पादकीय)

वरिष्ठ भजनोपदेशक पं. ओम्प्रकाश वर्मा के प्रेरक व रोचक संस्मरण

उन्हें चुटकले व किस्से पसंद न थे

♦इन्द्रजित्‌देव, चूना भट्टियां, सिटी सैंटर के नजदीक, यमुनानगर (हरियाणा)

स्वनाम धन्य श्री पं. रामचन्द्र देहलवी जी का जन्म रामनवमी के दिन हुआ था तथा इसी आधार पर उनके परिवार ने उनका नाम रामचन्द्र रखा था। आर्य समाज, हापुड़ अपना वार्षिकोत्सव भी उनके जन्म दिवस व रामनवमीं के अवसर पर प्रतिवर्ष मनाता है। सन्‌ १६५८ अथवा १६५६ में अपने वार्षिकोत्सव पर उस समाज ने मुझे आमन्त्रित किया था। मेरे अतिरिक्त दो–तीन संन्यासी व विद्वान्‌ उपदेशक भी वहाँ पधारे थे। श्री पं. रामचन्द्र देहलवी तो उत्सव की शोभा में अभिवृद्धि कर ही रहे थे।

वहाँ पहुँचने से पूर्व ही मैंने सुन रखा था कि श्री पं. जी अपने प्रवचन के उपरान्त किसी के भी भजन श्रोताओं को सुनाने का विरोध करते थे। उस नगर से पूर्व मैं पं. जी के साथ अन्य नगरों में प्रत्यक्ष ऐसा होता हुआ देख भी चुका था। उनका विचार था कि प्रवचनोपरान्त भजन व गीत नहीं सुनाए जाने चाहिए। इससे प्रवचन का अनुकूल प्रभाव नहीं पड़ता। शास्त्रार्थ महारथी श्री अमर स्वामी जी का विचार इस के विपरीत था। उनका मानना था कि यदि प्रवचन कमज़ोर होगा, तभी तो उपरान्त में भजन गाने से उसका प्रभाव घटेगा। वे कहाँ करते थे कि प्रवचन पर भजनों से पानी फिर जाता है, ऐसा नहीं हो सकता क्योंकि जिस खेत में पानी फिर जाएगा, उस खेत की फसल लहलहाएगी ही।

हापुड़ के उस कार्यक्रम में रामनवमी के दिन एक विशेष आयोजन हुआ जिसकी अध्यक्षता श्री पं. रामचन्द्र देहलवी जी ने की। मुझे आशंका थी कि पण्डित जी उसमें मुझे बोलने से रोक देंगे परन्तु उनकी कृपा व श्रोताओं का मेरे प्रति आकर्षण था। इन कारणों से मुझे भी समय दिया गया तो अपने अभ्यास के अनुसार मैंने पहले एक गज़ल के दो शे'र व तत्पश्चात्‌ कुछ व्याख्यान दिया। मुझसे पूर्व श्री पण्डित जी अपना व्याख्यान दे चुके व मेरी बारी उनके प्रवचन पश्चात्‌ ही आई थी। श्री पण्डित जी के विचार के कारण मैं भयभीत–सा था परन्तु उस दिन मेरा भय उत्साह में परिवर्तित हो गया। सबसे पहले मैंने एक ग़ज़ल के दो शेर सुनाए :

धर्म पर ऋषिवर जैसे ज़हर खाओ तो हम जानें,
मुसाफिर की तरह गर पेट फड़वाओ तो हम जानें।
मिशन पर गुरु के गुरुदत्त ने अपना जिस्म फूँका,
उस भट्टी में राख तुम भी बनो तो हम मानें।

इन शे'रों को सुनकर श्रोताओं ने करतल ध्वनि से बहुत देर तक मेरा उत्साह बढ़ाया। मेरा भय दूर भाग गया। मैं ने श्री पण्डित जी द्वारा विधर्मियों से किए कुछ शास्त्रार्थों की घटनाएं सुनाई।

उस दिन रामनवमी होने के कारण मैंने मर्यादा पुरूषोत्तम श्री रामचन्द्र जी व सुग्रीव की मैत्री का प्रसङ्ग सुनाना आरम्भ किया। लक्ष्मण जी मूर्च्छित पड़े थे तो सुग्रीव के परामर्श से वैद्यराज सुषैण को राम जी ने हनुमान के माध्यम से बुलाया। वैद्यराज ने घटना–स्थल पर आकर लक्ष्मण का उपचार करने से इनकार कर दिया। कारण पूछने पर उसने यह बताया कि मैं लंकेश का वैद्यराज हूँ तथा लंकेश अर्थात्‌ रावण की अनुमति के बिना यहाँ लाया गया हूँ। मेरा धर्म लक्ष्मण का उपचार करने से गिरेगा। अतः मैं यह उपचार नहीं करूंगा। मुझे क्षमा करें।''

वैद्य सुषैण की बात सुनकर श्री राम चन्द्र ने कवि के शब्दों में यह कहा :

चन्द्र टरे, सूर्य टरे, चाहे सब जग टर जाय,
धर्म छोड़ने की कभी राम न देगा राय।
जिस धर्म पर सारा राज्य गया,
श्री पितृदेव का मरण हुआ।
जिस धर्म पर भाई भरत छूटा,
और सीता प्यारी का हरण हुआ।
उसी धर्म पर लक्ष्मण भी यदि मरता है तो मर जाय।

मैं ने जब यह काव्याँश सुनाया तो श्रोताओं के नेत्रों से अश्रुधाराएं बहने लगीं। मैंने आगे यह कहा–राम के ये शब्द सुनकर सुषैण भी द्रवित हो गया व बोला–आर्यपुत्र! तुम्हारी परीक्षा लेने हेतु ही मैंने अपने धर्म पर प्रश्न किया था। वैद्य का धर्म तो सभी रोगियों की सेवा व उपचार करना ही है। मैं लक्ष्मण का उपचार अवश्य ही करूंगा।'' मेरी बातें सुनकर सभा के अध्यक्ष श्री पं. रामचन्द्र देहलवी जी अपने आसन से उठ खड़े हो गए व मेरे पास आकर बैठे। उन्होंने मुझे अपनी बाहों में भरकर समेट लिया व बोले–''मैं सभी भजनीकों द्वारा मेरे बाद गीत व भजन सुनाने का विरोधी नहीं हूँ। पं. कुँवर सुखलाल आर्य मुसाफिर जी को तो सभी उपदेशकों के अन्त्र में ही बुलवाया जाता रहा है। मैंने उनका कभी भी अपने बाद भजन सुनाने का विरोध नहीं किया। मैंने अपने प्रवचन के बाद उन्हीं भजनीकों के बोलने का विरोध किया है जो चुटकले व किस्से सुना–सुनाकर अपना समय पूरा कर देते हैं ऐसे लोग मेरे गम्भीर व सिद्धान्तनिष्ठ प्रवचनों का प्रभाव भी कम कर देते हैं।'' श्री पं. जी की बातें सुनकर मैं गद्‌गद्‌ हो गया व उनके चरण स्पर्श करके उठ खड़ा हुआ।

"सावधान-भारत इण्डिया बनता जा रहा है"

♦सत्यपाल भटनागर, अखाड़ा बाजार, कुल्लू (हि० प्र०)

संविधान में देश का नाम "भारत दैट इज इण्डिया" लिखा गया है। स्वतन्त्रता के ६५ साल बीतने के पश्चात् हमें समझ में आ रहा है कि संविधान निर्माता कितने दूरदर्शी थे। धीरे–धीरे भारत इण्डिया बनता जा रहा है। हमारी संस्कृति, भाषा, पहनावा, खान–पान, पारिवारिक समारोह, सम्बन्ध और त्यौहार सभी प्रभावित हो रहे हैं। आधुनिकता तथा वैश्वीकरण की आड़ में हम बहुत कुछ खोते जा रहे हैं।

भाषा को ही लीजिए आज़ादी की लड़ाई हम ने हिन्दी के झण्डे के नीचे लड़ी। हमारे नेता हिन्दी के माध्यम से ही आजादी का संदेश जन–जन तक पहुँचा सके और उन्हें एक जुट कर सके। विचार था कि स्वतन्त्रता के पश्चात हिन्दी राष्ट्रभाषा बनेगी। परन्तु यह राजनीति में फँस कर राज्यों और केन्द्र के मध्य एक सम्पर्क भाषा बन कर रह गई परन्तु उस पर भी यह शर्त है कि हिन्दी पत्र की एक प्रति अंग्रेज़ी में साथ लगाई जाए। दो पत्र लिखने के झंझट के कारण अब अंग्रेज़ी में ही पत्र व्यवहार होता है। हिन्दी चाहे सारे देश में समझी और बोली जाती है परन्तु एक अन्य षडयन्त्र हिन्दी के विरूद्ध किया जा रहा है। यह प्रचार जोरों पर है कि इन्जीनियर, डॉक्टर बनने तथा प्रशासनिक सेवाओं के लिए अंग्रेज़ी माध्यम से पढ़ाई अनिवार्य है। देखते ही देखते अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों का जाल बिछ गया और हिन्दी स्कूलों से विद्यार्थियों का पलायन आरम्भ हो गया। इसे रोकने के लिए सरकार ने कई पग उठाये। प्रथम श्रेणी से ही अंग्रेज़ी सरकारी स्कूलों में भी पढ़ाई जाने लगी। विशेषज्ञ प्राथमिक पढ़ाई को मातृ–भाषा में देना सर्वोत्तम मानते हैं। अंग्रेज़ी माध्यम की पढ़ाई भाषा का एक नया स्वरूप हिंगलिश को जन्म दिया। यह खिचड़ी भाषा हिन्दी और अंग्रेज़ी का मिलाजुला रूप है। दूरदर्शन के कार्यक्रमों में अंग्रेजी के शब्दों प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया जाता है। यही 'हिंगलिश' है।

अन्तर्राष्ट्रीय अंकों को हर क्षेत्र में अपनाये जाने के कारण, हिन्दी के अंकों को जानने और पहचानने वालों की संख्या सीमित हो गई है। गणित में रोमन अंक सिखाये जाते हैं। परन्तु हिन्दी अंकों को पढ़ाया और सिखाया नहीं जाता। अब देवनागरी लिपि की बारी है। कम्प्यूटर के की बोर्ड पर अंग्रेजी के अक्षर मिलेंगे परन्तु हिन्दी के नहीं। सभी एस. एम.एस. और ई–मेल अंग्रेज़ी में भेजने का प्रावधान है। सूचना एवं संचार मन्त्रालय ने देवनागरी लिपि तथा हिन्दी भाषा का मानकी–करण नही किया है। सारा कार्य रोमन लिपि में चल रहा है। हर देश में ई–मेल तथा एस. एम. एस. में अपने ही देश की भाषा का प्रयोग किया जाता है। भाषा राष्ट्र की आत्मा होती है। जिस का प्रयोग गर्व से किया जाना चाहिए। इन्टरनेट का प्रयोग २० वर्ष से हो रहा है। नई पीढ़ी रोमन लिपि के प्रयोग में अभ्यस्त हो गई है। देवनागरी लिपि से भी उन की दूरी बढ़ती जा रही है। जब की हिन्दी अति सरल भाषा है जैसे लिखी जाती है वैसी पढ़ी और बोली जाती है। अंग्रेज़ी इस के स्थान पर अति जटिल भाषा है, परन्तु उसे फिर भी अपनाया जा रहा है। त्यौहार हमारी संस्कृति के वाहक हैं। हमारे त्यौहार ऋतु और सामाजिक आवश्यकताओं को सामने रख कर मनाये जाते थे। इन्हें मनाने में सारे परिवार या समाज में एक जोश होता था। परन्तु आधुनिकता की दौड़ में हम अपने त्यौहारों को भूलते जा रहे हैं। उन के स्थान पर 'डे' मनाने की प्रवृति बढ़ रही है। इन की एक श्रृंखला बनती जा रही है। इनकी तिथियाँ कौन निर्धारित करता है पता नहीं। हाँ, मीडिया इनका अन्धा–धुन्ध प्रचार करता है। और हमारी युवा पीढ़ी इन्हें मनाने के लिये निकल पड़ती है। इन त्यौहारों में भारतीय त्यौहारों जैसी पवित्रता नहीं होती। इनके मनाने में पश्चिम की नकल की जाती है, जो हमारी सामाजिक परम्पराओं के विपरीत हैं।

'न्यू इयर डे' इन में से एक है। जिसे मनाने के लिये युवा पीढ़ी विशेष उत्साह बता रही है। वे ३१ दिसम्बर रात भर जागकर पुराने वर्ष को पहले विदा करते हैं और उसके पश्चात् नववर्ष का स्वागत आरम्भ करते हैं। सुरा का दौर चलता है। पटाखे छोड़े जाते हैं। सड़कों पर युवक और युवतियों को अंग्रेज़ी धुनों पर गाते और थिरकते देखा जा सकता है। इन्हें पूछकर देखिये कि विक्रमी संवत कब आरम्भ होता है और कितना है। देसी महीनों के नाम क्या हैं। कुछ न बता सकेंगे जबकि ज्योतिष की गणना, सारे सामाजिक मेले और त्यौहार इस सम्बत अनुसार ही मनाये जाते हैं। कुम्भ मेले में करोड़ों श्रद्धालु बिना किसी निमन्त्रण के सारे भारत से इन तिथियों के अनुसार इकट्ठे होते हैं। खेद की बात यह है कि सरकार ने भी इस सम्वत को मान्यता नहीं दी और इसके स्थान पर शाका संवत् को अपनाया। कहने का तात्पर्य यह है कि नई पीढ़ी आधुनिकता की दौड़ में अपने त्यौहारों, पर्वों, और संस्कृति से अनभिज्ञ होती जा रही है।

कुछ 'डे' हमारी अगली पीढ़ी को बिगाड़ रहे हैं

और अनाचार और दुराचार को समाज में प्रोत्साहन मिल रहा है। ऐसा एक 'वैलन्टाईन डे' है। वैलन्टाईन एक पादरी था जो युवक तथा युवतियों को प्रेम–पाश में बन्ध जाने के लिये उकसाया करता था। १४ फरवरी को उस पादरी का निधन हुआ था इस दिन युवक, युवतियाँ एक दूसरे को लाल गुलाब भेंट करके प्रेम दर्शाते हैं। हमारा समाज ऐसे खुलेपन की इजाज़त नहीं देता। इस से छेड़–छाड़ की घटनाएँ भी बढ़ रही हैं। नारी के प्रति आदर की भावना घट रही है। उसे भोग की वस्तु समझा जाने लगा। लड़कियों पर इन दिनों फवतियाँ कसना साधारण बात होती जा रही है। अब यह डे 'वीक' (सप्ताह) में बदल गया है। इस के मध्य १७ फरवरी को 'फ्लर्ट डे' मनाया जाता है। शिमला के मालरोड तथा रिज पर युवक और युवतियाँ अपने–अपने ब्वाय फ्रैंड और गर्लफ्रैंड को चिढ़ाने के लिये किसी अन्य से प्रेम दर्शाते नजर आये। कई विवाहित जोड़ियाँ भी इन में शामिल हुई। दीवारों पर हैप्पी फ्लर्ट डे के पोस्टर चिपकाये गये। फेस बुक पर सन्देश भेजे गए। सप्ताह के अन्त में 'ब्रेक–अप डे' मनाया जाता है जिसमें प्रेम तोड़ने की बात करते हैं। यह दिन समूहों में मनाया जाता है। इस से ही अनुमान लगायें कि हम कहाँ जा रहे हैं। अगली पीढ़ी सामाजिक शालीनता भूल रही है। कठोर नियमों से भी क्या होगा, जब विचारधारा में ही बिगाड़ पनप रहा हैं।

पश्चिम की नकल कर हमारी शिक्षा पद्धति एक मजाक बनकर रह गई है। बिना स्कूल आए और बिना पढ़े नये नियमों अनुसार 'पप्पू' पास हो रहा है। अध्यापक की भी सीमाएँ बांध दी गई हैं। वह प्रताड़ना भी नहीं कर सकता। प्रताड़ना शब्द की व्याख्या भी नियमों में नहीं है। यह पश्चिम की नकल हमें कहाँ ले जा रही है। अनुमान लगाया जा सकता है। मजे की बात तो यह है कि पश्चिम के लोग भारतीय जीवन शैली अपना रहे हैं। लोग न्यूयार्क सक्वायर पर योग करते हुए दिखाई देते हैं। वे चिकित्सा में आयुर्वेदिक पद्धति अपना रहे हैं। कितने ही देशों के लोग अध्यात्म सीखने के लिए भारत आये हुए हैं। देश को दिशा देने का कार्य राजनेता करते हैं नीति निर्धारण भी वही करते हैं। पश्चिम सभ्यता के पैरोकार इन्हीं में हैं। हमारा सामाजिक पर्यावरण और जीवन शैली पश्चिम से भिन्न है। पश्चिम से विज्ञान के अतिरिक्त सीखने के लिए कुछ भी नहीं है। समय के अनुसार परिवर्तन बुरा नहीं, परन्तु पश्चिम का आँख मूँद कर नकल करना बुरा है। इस बात को जितनी जल्दी समझा जाये, उतना ही अच्छा होगा।

पहनावे में भी हम बहुत तेजी से पश्चिम की नकल करने लगे हैं। स्त्रियाँ अंग प्रदर्शन धड़ल्ले से करने लगी हैं जिस में नारी शालीनता समाप्त हो रही है। फैशन शो में नारी, प्रदर्शनी की एक वस्तु बनती जा रही है। खान–पान में भी परिवर्तन आ रहा है। रसोई की पवित्रता समाप्त हो गई रसोई के अन्दर जूतों के साथ प्रवेश साधारण बात हो गई है। फास्ट लाईफ में फास्ट फूड भोजन का अंग बनती जा रही है। बच्चे चिप्स, पीजा और कोल्ड ड्रिंक्स की मांग करते हैं। बच्चे दूध और परम्परागत भोजन से भागते हैं। माता–पिता बच्चों के आगे अपने आप को असहाय समझ रहे हैं। सब कुछ समझते हुये भी उनकी मांग पूरी करने में ही भलाई समझते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि देश इण्डिया बनता जा रहा है। और अगर ऐसा ही चलता रहा तो संविधान में संशोधन कर इण्डिया दैट इज भारत करना पड़ेगा।

संघ समाचार

प्रिय पैंशनर बन्धुओं,

आपकी सूचनार्थ निवदन है कि दिव्य मानव ज्योति अनाथालय डैहर में दिनांक २६ मार्च २०१३ को वर्ष २०१३–१५ के द्विवार्षिक चुनाव कराकर आगामी दो वर्षो के लिये अप्रैल २०१३ के अंत तक नव कार्यकारिणी के गठन की घोषणा हो चुकी है। अप्रैल के अन्त तक सभी जिला मण्डी के समस्त खण्डों के प्रधान एवं मन्त्री से अनुरोध है कि वे अपनी सुविधानुसार अपने खण्डों के चुनाव कराने की विधि की सूचना चुनाव से १० दिन पूर्व जिला प्रधान एवं सचिव को अवश्य भेजें ताकि जिला की ओर समर्थ पर्यवेक्षक भेजा जा सके तथा जिला प्रधान अथवा सचिव भी हर खण्ड के चुनाव में अपनी उपस्थिति दर्ज करवा सकें। आपकी सूचनार्थ यह भी निवेदन है कि जिला मण्डी के पैंशनर संघ की नई कार्यकारिणी के गठन हेतु चुनाव १६ मई, २०१३ प्रातः ११ बजे चैलचौक में होगा। अतः अपने–अपने खण्डों में अधिकाधिक सदस्यता करा कर जिला कार्यकारिणी के नव गठन में सहयोग दें। चुनाव में भाग लेने वाले सदस्यों की सूची भी जिला और स्टेट शेयर सहित साथ लायें। ऐसी जुझारु कार्यकारिणी का नव गठन करें जो पैंशनरों की समस्याओं को जोरदार ढंग से प्रदेश सरकार के सामने रखे और उनका समाधान कराये। आप द्वारा जिला मण्डी में दिये ऐतिहासिक शान्ति पूर्वक धरने देने के लिये आपका धन्यवाद।

मुझे आशा है कि आप सभी का भरपूर सहयोग नवगठित कार्यकारिणी को पूर्ववत मिलता रहेगा।

संघ चुनाव : हिमाचल पैंशनर्ज़ कल्याण संघ, सुन्दरनगर की वर्तमान कार्यकारिणी की अन्तिम बैठक ३० अप्रैल को जवाहर पार्क में सम्पन्न होगी तथा २०१३–१५ की कार्यकारिणी के द्विवार्षिक चुनाव १० मई को आनन्द धाम वृद्धाश्रम सुन्दरनगर में सुन्दरनगर खंड के सभी पैंशनर लोकतान्त्रित ढंग से सम्पन्न करवायेंगे।

–मुख्य प्रबन्ध सम्पादक

''ग्रह पूजन''-एक विवेचना

•अनुराधा आर्या, प्राचार्या, दयानन्द आदर्श विद्यालय, कण्डाघाट, जिला सोलन (हि० प्र०)

हजारों वर्षों की अज्ञानता, अन्धविश्वास और पराधीनता के कारण हम अपना स्वतन्त्र चिन्तन और विवेकशीलता को छोड़ बैठे हैं। शारीरिक, सामाजिक तथा आर्थिक गुलामी से व्यक्ति और समाज की हानि होती ही है। परन्तु जब व्यक्ति बौद्धिक रूप से गुलाम हो जाता है तब उसका सर्वनाश निश्चित है। इसी गुलामी के कारण हम हजारों वर्ष तक विदेशियों के पैरों तले दबे पड़े रहे। जो कुछ होना होगा देवताओं की, नक्षत्रों की कृपा से होगा। यह है हमारी सबसे बड़ी मानसिक दुर्बलता। इस दुर्बलता का सबसे बड़ा उदाहरण नव ग्रह पूजन के रूप में देखा जा सकता है।

कुछ लोगों का विचार है कि जिस तरह राशि और राशिफल सुख–दुखादि द्वारा मनुष्य के जीवन को प्रभावित करते हैं उसी प्रकार नव ग्रह भी हमारे जीवन को प्रभावित करते हैं अर्थात् मनुष्य के जीवन में जो सुख–दुख आते हैं वह सब इन्हीं ग्रहों के शुभ–अशुभ प्रभाव का परिणाम है।

जो फलित ज्योतिषी हैं वो इन्हीं ग्रहों की गति के आधार पर यह बताते हैं कि अमुक मनुष्य के भाग्य में क्या है ? यह बात यहीं तक सीमित नहीं होती बल्कि इनसे होने वाले दुष्परिणामों को पूजा–पाठ के द्वारा एवं दानादि के द्वारा दूर किया जा सकता है। यही है नव ग्रह पूजन का आधार, जिसने इस देश को ही नहीं बल्कि संसार के सब पढ़े एवं अनपढ़ लोगों को दिक्भ्रमित कर रखा है।

नव ग्रह पूजन से पहले ग्रह शब्द को समझ लें। ग्रह उपादाने धातु से बनता है जिसका अर्थ पकड़ना, धारण तथा ग्रहण करना है।

ग्रहो निग्रह निर्बन्ध ग्रहणेषु रणोघने
सूर्यादौ पूतनादौ च सैहिकोर्या परागयोः।।

इन अर्थों से स्पष्ट होता है कि ग्रहण शक्ति को रखने वाले जड़ पदार्थ को ग्रह कहा जाता है। इसका अन्य किसी व्यक्ति विशेष आदि से ग्रह का कोई सम्बन्ध नहीं है। मानव जीवन में जो सुख–दुख आते हैं वह ग्रहों का प्रभाव नहीं बल्कि मानव द्वारा किये गये शुभ–अशुभ कर्मों का फल है।

ग्रह नक्षत्रों की गतिविधियां प्रकृति के माध्यम से हमें प्रभावित अवश्य करती हैं लेकिन ग्रह–नक्षत्र हमारे कर्मफल दाता नहीं हैं। उदाहरण के रूप में सूर्य आदि सभी ग्रह अपना प्रभाव ड़ालते हैं जिसके कारण वस्तुओं में विभिन्न परिवर्तन होते हैं। परन्तु यह परिवर्तन या प्रभाव विभिन्न वस्तुओं की अपनी अवस्था के कारण होता है। सूर्य का प्रकाश सर्वत्र पड़ रहा है। पृथ्वी पर एक वृक्ष हरा–भरा है तथा दूसरा सूखा हुआ। सूर्य की किरणें एक ही काल में दोनों वृक्षों पर एक समान रूप से पड़ रही हैं। परन्तु जो कटा वृक्ष है वही नित्य प्रति सूख रहा है। जो जमीन पर लगा हरा वृक्ष है वह सूर्य के प्रकाश से नित्य प्रति बढ़ रहा है। जब किरणें दोनों वृक्षों पर समान रूप से पड़ रही हैं तो एक में क्षीणता और एक में वृद्धि क्यों ? वही सूर्य का प्रकाश पत्थर पर पड़ रहा है और वही बर्फ पर पड़ रहा है। परन्तु पत्थर सख्त हो रहा है और दूसरी ओर बर्फ पिघल रही है। उसी सूर्य के प्रकाश से नेत्रवान व्यक्ति प्रकृति की सुन्दरता को देखकर प्रसन्न होता है परन्तु जिसकी आंख दुखती है वह सूर्य के प्रकाश को दुखदायी समझता है। सूर्य तो जड़ वस्तु है वह न तो किसी को सुख देता है और न ही किसी को दुख। जिस वस्तु की स्वयं की अवस्था है उसी के अनुसार उसमें परिवर्तन एवं हानि–लाभ का अनुभव होता है।

मौसम बदलता है, उस समय मनुष्य के शरीर पर कुछ न कुछ प्रभाव पड़ता है। यदि ग्रहों को पापों द्वारा निर्धारित प्रत्येक मनुष्य के भाग्य का नियामक मान लिया जाए तो सभी एक ही राशि वालों पर समान प्रभाव और अलग–अलग राशि वालों पर अलग–अलग प्रभाव पड़ना चाहिए पर ऐसा क्यों नहीं होता ?

एक ही नक्षत्र में अनेक बच्चे पैदा होते हैं। क्या सबका भविष्य एक जैसा करने का ठेका ज्योतिषियों ने ले रखा है। नौ बजे एक बच्चा राजा के यहां, एक ईंजीनियर के घर, एक भंगी के तथा एक निर्धन के यहां पैदा होता है। कौन कह सकता है कि सबका भविष्य एक जैसा होगा ?

ब्रह्मा के पुत्र वशिष्ठ ने ग्रह मुहूर्त देखकर ही लग्न रखा था कि प्रातःकाल रामचन्द्र को गद्दी मिलेगी। परन्तु कर्मों की गति को देखिए कि प्रातः काल रामचन्द्र को वनवास जाना पड़ा। दशरथ प्राण छोड़ते हैं, तीनों पत्नियां विधवा हो जाती हैं।

इसी प्रकार ग्रहों के चढ़ने की बात बड़ी विचित्र मानी जाती है। जिस पृथ्वी ग्रह पर हम रहते हैं उसकी परिधि २५,००० मील की है। सूर्य पृथ्वी से १२ लाख गुणा बड़ा है। सूर्य से भी बड़े ग्रह वृहस्पति आदि आकाश में हैं। अब बताईए ऐसे ग्रहों का चढ़ना कैसे सम्भव है ? और फिर मजे की बात तो यह है कि ग्रह चढ़े हैं लाला जी पर और मालूम होता है पण्डित जी को।

वास्तव में प्रत्येक प्राणी अपने कर्मों का फल भोगता है। कर्मफल से कभी छुटकारा नहीं मिल सकता। इसलिए पुरूषार्थी बनें। शुभ कर्म करें। गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है :

कर्म प्रधान विश्व रचि राखा,
जो जस करै सो तस फल चाखा।

"दयानन्द मठ घण्डरां"

♦विनोद स्वरूप, मुख्य प्रबन्ध सम्पादक

सन्त शिरोमणि स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का ११३ वां जन्मोत्सव वार्षिक उत्सव के रूप में दयानन्द मठ घण्डरां में २२ से २४ मार्च, २०१३ को अपूर्व श्रद्धा, भक्ति भावना और हर्षोल्लास के साथ बड़ी धूम धाम से मनाया गया। प्रतिदिन प्रातः ८ बजे से हवन–यज्ञ का आयोजन होता रहा। भजन के ब्रह्मा आर्य समाज मॉडल टाऊन पठानकोट के पुरोहित श्री सुधीर कुमार शास्त्री जी ने वेद मन्त्रों से आहुतियां डलवाईं। प्रातः सूर्य की स्वर्णिम किरणों और शीतल मन्द समीर से युक्त मनोहारी वातावरण में श्रद्धालुओं ने बारी–बारी से घृत, सामग्री और प्रशाद की आहुतियां श्रद्धापूर्वक डाल कर अपना जीवन धन्य किया। यज्ञ धुनि से वातावरण सुगन्धमय एवं सुरम्य बन जाता था। चम्बा से पधारे भजनोपदेशक श्री सुरेश कुमार शास्त्री जी ने जी भजन के माध्यम से समझाया कि यह भव सागर बहुत गहरा है प्रभु मुझ पर ऐसी कृपा करो कि मैं छल–कपट से मुक्त हो कर जन्म–मरण के बन्धन से छूट जाऊं और इस सागर को सुमगता से पार कर जाऊं :–

सुत दारा सब स्वार्थ का संसारा, जीवन पाप की ढ़ेरी,
सुन नाथ अर्ज अब मेरी, मैं शरण पड़ा प्रभु तेरी।
मैं सेवक तुम दाता मेरे, निस दिन तेरी ओट है,
कर दो दूर प्रभु मेरे, अन्दर जो भी खोट है।

इस मठ में यू.पी., बिहार और हरियाणा के निर्धन परिवारों के बच्चे जिन्हें 'ब्रह्मचारी' के नाम से सम्बोधित किया जाता है निवास करते हैं। प्रातः ब्रह्म मुहुर्त में घन्टी बजते ही विस्तर त्याग कर प्रांगण में एकत्र हो कर गायत्री मन्त्र और ईश वन्दना कर के शौच आदि से निवृत हो कर मठ के कमरों और प्रांगण की सफाई में जुट जाते हैं। गऊओं की सेवा पानी चारा आदि का प्रबन्ध करने के उपरान्त स्नान आदि के पश्चात प्रतिदिन हवन यज्ञ करने के बाद भोजन ग्रहण कर नजदीक की पाठशाला में विद्याग्रहण करने जाते हैं। इन के पठन पाठन का पूरा खर्च मठ वहन करता है। सभी ब्रह्मचारी अनुशासन प्रिय एवं संस्कारी हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के वेद प्रचारक आचार्य नारायण जी ने अपने उत्तम विचारों की अमृत वर्षा करते हुए बताया–मनुष्य चाहे वह बच्चा हो, जवान, बूढ़ा, नर–नारी सभी कर्मशील प्राणी हैं। कर्म शुभ हो अथवा अशुभ बिना कर्म के कोई प्राणी नहीं है किन्तु ईश्वर ने तो हमें इस जगत् में मात्र शुभ कर्म करने के लिए भेजा है, उन्होंने बुराईयों पर प्रहार करते हुए कहा चोरी, डेकैती, हत्या अथवा आतंक फैलाने के लिए नहीं भेजा किन्तु हम सांसारिक पदार्थों के भ्रम में पड़ कर दिग्भ्रमित हो जाते हैं परिणामस्वरूप बुरे कर्मों की ओर आकर्षित होते हैं। वेदों में कहा है–'जीवन का सर्वश्रष्ठ कर्म यज्ञ है'। यदि स्वर्ग का सुख भोगना चाहते हो तो सदैव श्रेष्ठ कर्म करें। संसार में जो सुख भोग रहा है वह स्वर्ग में हैं। सुख का पर्याय 'स्वर्ग' और दुःख का 'नरक' है। घर में यदि पति पत्नी के झगड़े के कारण क्लेश रहता है। पुत्र आज्ञा का पालन नहीं करता। शरीर अस्वस्थ रहता है। धन धान्य होते हुए भी मनचाहा खान पान व्यक्ति न कर सके तो वह नरक में है। सरकारी सेवा से तो हम ५८ या ६० वर्ष के होने पर सेवा मुक्त हो जाते हैं किन्तु श्रेष्ठ कर्म यज्ञ से हम जीवनपर्यन्त मुक्त नहीं हो सकते। आचार्य जी ने श्रद्धालुओं को लाख टके की बात बताई। जरुरत के समय हम किसी से पैसा उधार लेते हैं जब हम उस धन को लौटाते हैं तो हम आभार प्रकट करते हुए धन्यवाद देना नहीं भूलते साथ ही उस व्यक्ति के एहसान को हमेशा याद रखते हैं ठीक वैसे ही ईश्वर ने हमें मानव चोला दिया है, स्वस्थ निरोग शरीर, देखने–सुनने के लिए आंख–कान, घूमने फिरने के लिए टांगे तथा सोचने समझने के लिए बुद्धि। खाने पीने के लिए स्वादिष्ट व्यंजन दिये हैं। जिस प्रभु ने हमें इतने वरदान दिये हैं उस का धन्यवाद करना हमें कदापि नहीं भूलना चाहिए। उस का धन्यवाद करने के लिए संध्या करें। ईश स्तुति और उपासना कर के प्रभु का आभार व्यक्त करना चाहिए। बच्चों को सब से ज्यादा नींद क्यों आती है ? क्योंकि वे कभी झूठ नही बोलते, फरेब नहीं करते, अशुभ कार्य का उन्हें ज्ञान ही नहीं होता। हृदय को पवित्र रखने के लिए यज्ञ करें। नौकर का हृदय पवित्र होगा तो वह मालिक का विश्वास जीत लेगा। शुद्ध–जल से भरे मटके में एक लोटा अशुद्ध जल डालेंगे तो सारा जल गन्दा हो जायगा। इस लिए अपने पवित्र हृदय में काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार मद मत्सर रूपी अपवित्र विचारों को स्थान न दें। सुरेश जी ने प्रकृति के मनोरम दृश्यों में ईश्वर की अनुपम कला का दर्शन करवाते हुए भजन गया–

कोयल मैना वन उपवन में तेरे गीत सुनाऐं,
हर चमन का पत्ता पत्ता तेरा पता बताऐ।

सच्चा ईश्वर भगत प्रभु से क्या याचना करता है, सुरीले भजन से वातावरण भक्तिमय बना दिया :

इक बूंद जो मिल जाय तकदीर बदल जाय,
ये मन बडा चंचल है, चिन्तन में नहीं लगता,
जितना इसे समझाऊं उतना ही मचल जाय।

यज्ञ की धुनि का अदभुत प्रभाव : –मठ के मुनि हरिश्चन्द्र जी ने बताया कि हम ने अपने तीन किला भूमि में लगे आम,

आम्बला, पपीता, किन्नू, लीची, सन्तरे, अमरूद के पौधों और फसलों पर कभी कीटनाशक का छिड़काव नहीं किया। मठ में गऊओं, ब्रह्मचारियों संन्यासियों को कोई बीमारी नहीं सताती। गौऊएं स्वस्थ और अधिक दूध देती हैं। यह सब यज्ञ की धुनि का प्रभाव है, वातावरण शुद्ध और स्वास्थ्यवर्धक रहता है जिस कारण सभी प्रसन्नचित हो आध्यात्मिक कार्यों में मग्न रहते हैं। यज्ञ के ब्रह्मा सुधीर कुमार शास्त्री जी ने श्रद्धालुओं को सचेत करते हुए कहा कि जीवन में आने वाली विघ्न बाधाओं के कारण मानव भक्ति मार्ग से भटक कर ईश्वर को कोसता है किन्तु ज्ञात रहे प्रभु हमारी परीक्षा लेता है :

भरोसा कर तू ईश्वर पर, तुझे धोखा नहीं होगा,
ये जीवन बीत जायगा तुझे रोना नहीं होगा,
कभी दुःख है कभी सुख है ये जीवन धूप छाया है,
हंसी में ही बिता डाल बितानी ही ये भाया है।

पूर्णाहुति की पूर्वरात्री को तुफान आने के कारण विद्युत आपूर्ति बन्द हो गई किन्तु फिर भी श्रद्धालुओं के उत्साह में किसी प्रकार की कमी नहीं हुई। पठानकोट, गुरदासपुर, दीनानगर से अधिकतम आर्य परिवार प्रातः ६ बजे मठ में पधारने लगे। देखते ही देखते विशाल यज्ञशाला एवं पांडाल खचाखच भर गया। नर–नारी, बच्चे बूढ़े उत्सव के प्रति बहुत उत्साहित थे। मुख्य हवन कुण्ड के अतिरिक्त दो अस्थाई कुण्ड भी यज्ञशाला में सजाये गये थे। ब्रह्मा के आसन ग्रहण करने से पूर्व ही यजमानों ने अपना स्थान ग्रहण कर लिया। पूर्णाहुति के उपरान्त सन्यासियों ने वेदमन्त्रों के साथ पुष्पवर्षा करते हुए यजमानों के शुभाशीर्वाद दिया। स्वामी शोभानन्द जी महाराज ने सत्य की महिमा प्रकट करते हुए कहा–सदियों से राजा हरिश्चन्द्र के साथ 'सत्यवादी' शब्द जुड़ा है। एक आदमी महात्मा के पास जा कर बोला, 'मुझ में बहुत सी बुराईयाँ हैं, मैं इन का सुधार कैसे करू ?' महात्मा जी बोले–'तू सदैव सत्य बोला कर।' 'यह काम तो आसान है'– आदमी ने कहा। एक दिन वह जुआ खेलने निकला तो एक आदमी ने पूछा तू कहां जा रहा ? 'घर जा रहा हूँ'–वह बोला और वहीं से मुड़ कर घर आ गया। फिर चोरी करने निकला, लोगों ने पूछा–कहाँ जा रहे हो ? घर जा रहा हूँ। फिर रास्ते से लौट आया और चोरी करने से बच गया। नगर के सेठ के यहां प्रीतिभोज का आयोजन था, वह भी बिन बुलाये चला गया। द्वार पर सिपाहियों ने पूछा–तू कौन है ? 'मैं चोर हूँ'–उस ने उत्तर दिया। सिपाहियों ने सोचा यह मजाक कर रहा है, कभी चोर भी अपने को चोर कहता है और उसे भीतर जाने दिया। झूठ तो उसे बोलना नहीं था। सेठ के कोषागार में जा घुसा। गठरी में आभूषण बान्ध कर बाहर साफ निकल आया। सेठ को पता चला घर में चोरी हुई है, उस ने थाने में रपट लिखाई। दारोगा को मालूम था फलां आदमी ने सच बोलने की कसम खाई है। थानेदार ने उसके घर जा कर पूछा–सेठ के यहां चोरी हुई है, क्या तुम ने की है ? हां चोरी मैंने की है, गहने बरामद हो गये और उसे सेठ के सामने पेश किया गया। राजा को जब मालूम पड़ा कि यह हमेशा सच बोलता है तो अपने बेईमान मुनीम की जगह उसे नौकरी दे दी सच बोलने से उस का जीवन सफल हुआ। आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के वरिष्ठ उपप्रधान श्री कृष्ण चन्द आर्य ने अपने विचारों की अमृतवर्षा करते हुए कहा कि इस मठ में आकर अपूर्व शान्ति अनुभव होता है। आज संचार क्रान्ति ने अचरज पैदा कर दिया है। विदेश में बैठे व्यक्ति से जब चाहें बात कर सकते हैं विज्ञान मानव के लिए बहुत बड़ा वरदान है किन्तु धीरे–धीरे यह अभिशाप में बदल रहा है। एक बार महान् वैज्ञानिक आईंस्टाईन से पूछा गया–तीसरा विश्वयुद्ध किस से लड़ा जायगा ? उस ने उत्तर दिया तीसरा तो पता नहीं किन्तु चौथा विश्वयुद्ध पत्थरों से लड़ा जायगा क्यों कि तब सब कुछ नष्ट भ्रष्ट हो चुका होगा। सन्त दूसरों के दुःख देखकर द्रवित होते हैं किन्तु अपने बड़े से बड़े दुःख को छोटा मानते हैं महर्षि दयानन्द ने एक बार एक महिला को अपने जिगर के टुकड़े का शव गंगा में प्रवाहित करते देखा किन्तु शव पर लपेटा कपड़ा वह अपने साथ ले लाई। ऋषि ने जब यह मार्मिक दृश्य देखा तो उन से रहा न गया और महिला से पूछा–'बहन पुत्र का शव तो गंगा में प्रवाहित कर दिया किन्तु कफन अपने साथ ले आई ? 'महिला ने आंखों में अश्रुधारी बहाते हुए रूंधे कण्ठ से कहा–महाराज, इस कपड़े के अतिरिक्त मेरे पास तन ढ़ापने के लिए अन्य कोई वस्त्र नहीं है। ऋषि यह बात सुन कर रात भर सो न सके। भारत की ऐसी दीनहीन दशा देखकर व्यथित हो उठे। आर्य जी ने मठ में स्वर्गीय केसरी दास तिवारी भवन की ऊपरी मंजिल का निर्माण करने हेतु एक लाख रूपऐ दान देने की घोषणा की किन्तु इस शर्त के साथ कि भवन में जो नाम पट्टिका लगे उस में लिखा जाय–'यह भवन श्रीमति महेन्द्री देवी निवासी सुन्दरनगर ने अपने दिवंगत पति श्री कृष्णचन्द आर्य की स्मृति में बनवाया।' यह शर्त सभी को बहुत टेढ़ी तथा अजीब लगी इस शर्त पर सभी ने असहमति जताई। इस के पीछे क्या भावना हो सकती है ? जब आर्य जी को पूछा गया तो उन का उत्तर था–'यह मेरे हृदय की अभिव्यक्ति है।' अन्य कोई टिप्पणी करने से उन्होंने इन्कार कर दिया। उत्सव में महिलाओं की संख्या अधिकतम थी, उन्हें सम्बोधित करते हुए आर्य जी ने कहा–माता बच्चों की आदि गुरू होती है। अपने बच्चों को उचित शिक्षा देकर निर्भीक और बहादुर बनाऐं–

नारी जने तो भगत जने या जने शूर
अथवा नारी वांझ भली, क्यों खोये नूर

मठ के अध्यक्ष दीनानगर से पधारे स्वामी सदानन्द जी महाराज जिन्होंने ने मंच का संचालन भी किया श्रोताओं को बताया कि जीवन में समय का सदा सदुपयोग करें। यहां सत्संग की निर्मल गंगा प्रवाहित हो रही है इस ज्ञान गंगा में गोता लगायें, कुछ आध्यात्मिक सन्देश ले कर जाऐं।

मुनि हरिश्चन्द्र जी ने सर्वेश, सकल सुखदाता प्रभु तथा ऋषि दयानन्द का गुणगान करते हुए हृदय को छू जाने वाला सुरीला भजन गा कर वातावरण को भक्तिमय बना दिया ओ ऋषि, ओ ऋषि आया था तू, मल्लाह बन जो तू न आता कुछ भी न पाता, मैं भी न गा पाता।

इस देश में पाखण्ड और आडम्बर का बोल वाला था, अनाथ सताये जाते थे, छूआछूत की बीमारी की जड़ें गहराती जा रही थीं जादू टोने का प्रचार धड़ल्ले से हो रहा था। तेरे आने से इन सब पर अंकुश लगा। लाजपत, राजगुरू, सुखदेव, भगत तथा लक्ष्मीबाई सरीखे महान् देश भक्त तेरी प्रेरणा पा कर देश के लिए शहीद हुए।

गुरूवर के वचनों को खूब निभाया था,
विष पी कर के अमृत हमें पिलाया था,
उपासना वन्दना से शीश झुकाया था,
हरिश्चन्द्र ने ऋषि की वन्दना को गाया था।

आचार्य नारायण जी : हवा, पानी, भोजन शरीर की मूलभूत आवश्यकताऐं हैं। उसी प्रकार सुख भी मानव के लिए आवश्यक है, कोई प्राणी दुःख नहीं चाहता, केवल सुख चाहता है। सुख का मूल धर्म है। धार्मिक सुखी और अधार्मिक दुःखी रहता है। ज्यों–ज्यों धन बढ़ता जायगा चिन्ताऐं बढ़ेगी। दुर्योधन के पास अपार धन था किन्तु वह सुखी नहीं था रावण के पास तो सोने की लंका थी तो क्या वह सर्वसुखी था ? सारे संसार का धन यदि एक व्यक्ति को मिल जाय और उसके संतोष का बांध टूट जाय तो क्या वह सुखी रह सकता है ? कदापि नहीं। वैदिक धर्म का आधार ४ वेद हैं। ईसाई, मुस्लिम, बोध, जैन, सिख, पारसी ये धर्म नहीं सम्प्रदाय हैं। वैदिक धर्म की स्थापना किसी व्यक्ति विशेष ने नहीं की। ऋषियों के हृदयों में प्रकाश की ज्योति जला कर इस का प्रकाश मानव तक पहुंचाया। महर्षि स्वामी दयानन्द की प्रेरणा से हम अपने जीवन का निर्माण कर रहे हैं। सत्य का पालन, न्याय और पक्षपात रहित होना ये धर्म के पायदान हैं। आचार्य जी ने पते की बात बताई, झूठ बोलने वाले बेटे से माता–पिता प्यार नहीं करते तो परमपिता झूठे प्राणी से प्रेम कैसे करेगा ? आज स्थिति यह कि मानव अपने धन से सन्तुष्ट नहीं, वह अपने भाई या पड़ोसी का धन हड़पना चाहता है। जिसका धन छीना जाता है वह तो दुःखी होता ही है जो बिना परिश्रम के धन प्राप्त करता है उसे भी सुख प्राप्त नहीं होता। दुर्योधन ने जुआ खेलकर छल से पाण्डवों का धन हड़प्प लिया यहां तक कि युधिष्ठिर ने द्रोपती को भी दाव पर लगा दिया किन्तु दुर्योधन फिर भी सन्तुष्ट न हुआ। अन्त में वही धन कौरवों के विनाश का कारण बना। कहने का तात्पर्य है कि धन कभी भी सुख का आधार नहीं हो सकता।

मठ के संचालक स्वामी सन्तोषानन्द जी : ईश्वर की अपार कृपा से हमारा उत्सव सम्पन्न हुआ, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल, से आये श्रद्धालुओं ने समारोह में पधार कर हमारा उत्साह बढ़ाया तथा सहयोग दिया इस के लिए सभी का हृदय से आभार व धन्यवाद! भविष्य में भी अपना सहयोग बनाऐं रखें। अन्त में शान्ति पाठ के उपरान्त 'ओ३म्' के जयघोष से परिसर गुंजायमान हो उठा। ऋषिलंगर में सभी ने स्वादिष्ट भोजन ग्रहण किया। ऐसा था आंखों देखा और कानों सुना घण्डरां मठ का वार्षिक उत्सव।।

''माँ''

माँ कबीर की साखी जैसी
तुलसी की चौपाई–सी
माँ मीरा की पदावली–सी
माँ है ललित रुबाई–सी।
माँ वेदों की मूल चेतना
माँ गीता की वाणी–सी
माँ त्रिपिटिक के सिद्ध सुक्त–सी
लोकोत्तर कल्याणी–सी।
माँ द्वारे की तुलसी जैसी,
माँ बरगद की छाया–सी
माँ कविता की सहज वेदना,
महाकाव्य की काया–सी।
माँ अषाढ़ की पहली वर्षा
सावन की पुरवाई–सी
माँ बसन्त की सुरभि सरीखी, बगिया की अमराई–सी।
माँ यमुना की स्याम लहर–सी, रेवा की गहराई–सी
माँ गंगा की निर्मल धारा, गोमुख की ऊँचाई–सी।
माँ ममता का मानसरोवर हिमगिरि सा विश्वास है,
माँ श्रद्धा की आदि शक्ति–सी कावा है कैलाश है।
माँ धरती की हरी दूब–सी, माँ केशर की क्यारी है। पूरी सृष्टि निछावर जिस पर, माँ की छवि ही न्यारी है।
माँ धरती के धैर्य सरीखी, माँ ममता की खान है। माँ की उपमा केवल है माँ, सचमुच ही भगवान है।

–निदा फाजली

सभा प्रधान श्री सत्यप्रकाश मेहन्दीरत्ता जी द्वारा दो पत्रों को सदस्यों की जानकारी हेतु यथावत् प्रकाशित किया जाता है।

सेवा में

श्रीयुत प्रधान जी,
श्रीयुत उप–प्रधान जी,
आंचलिक समिति,
आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश

विषय : आंचलिक समितियों की रिपोर्ट

महोदय!

आशा है आप सब आनन्द से हैं। सब से पहले आप सबको आपके प्रयास, दृढ़ विश्वास के कारण हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में "स्वामी दयानन्द सरस्वती चेयर" की स्थापना व उसे शीघ्र ही सक्रिय होने के लिए बहुत–बहुत बधाई। यह हमारे इस कार्यकाल की बहुत बड़ी उपलब्धि है। बड़ा प्रयास किया और अन्ततः सफलता मिली। आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश की यह उपलब्धि आर्य समाज के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में लिखी हुई जानी जाएगी। पुनः बधाई!

आर्य प्रतिनिधि सभा हि.प्र. के इस कार्यक्रम की पहली बैठक जो जोगिन्द्रनगर में हुई थी, आर्य समाज को गतिशील बनाने व बहुत सी आर्य समाजों के सम्बन्ध में सूचनाएं एकत्रित करने व आदर्श समाज बनाने के लिए आप के आधीन अध्यक्षता में आंचलिक समितियों का गठन किया गया था। बहुत कम समाजें प्रत्येक समिति को दी गई थी ताकि वे सुगमता से अपना कार्य कर पाएं। मुझे पूरा विश्वास है आपने कार्य कर लिया होगा, सूचनाएं एकत्रित कर ली होंगी। आप आर्य समाज हिमाचल प्रदेश के वरिष्ठ नेता हैं व आर्य समाज को समर्पित हैं और आपके बिना सहयोग के हिमाचल आर्य समाज को गतिशील बनाना आसान नहीं है। एकत्रित सूचना व आप द्वारा किये गए कार्य की सूचना आपने सम्भवतया महामंत्री जी को अभी नहीं भेजी है। कृपया बिना देरी एकत्रित सूचना उन्हें भेजें ताकि महामंत्री जी उन्हें इक्ट्ठा कर, आपके सुझावों के अनुसार आगामी कार्यवाही कर सकें और 'आर्य वन्दना' पत्रिका में भी प्रकाशित करवा सकें। आपकी सूचना प्राप्त होते ही महामंत्री जी के परामर्श के अनुसार आर्य समाजों में जाने का कार्यक्रम बनाया जाएगा। हर स्थिति में आर्य समाजों को गतिशील बनाना ही है। यह हमारा संकल्प है।

योग्य सेवा व आदर के साथ।

भवदीय
सत्यप्रकाश मेहन्दीरत्ता

सेवा में

१) श्रीयुत प्रधान जी श्रीयुत मंत्री जी,
प्रत्येक आर्य समाज, हि. प्रदेश
२) कार्यकारिणी के सभी माननीय अधिकारी
व माननीय सदस्य। विशेष सदस्य।
आर्य प्रतिनिधि प्रभा हि. प्र.

विषय– आर्य समाज संगठन व प्रत्येक आर्य समाज की स्थिति के सम्बन्ध में विचार।

महोदय!

आप सबको मेरा सादर प्रणाम! माननीय श्री कृष्ण चन्द आर्य, वरिष्ठ उप–प्रधान व सम्पादक आर्य वन्दना द्वारा आर्य वन्दना में मेरी बाईपास सर्जरी के सम्बन्ध में सूचना प्रकाशित करने से मेरे शुभ चिन्तकों व अधिकतर आर्य समाजों के सदस्यों द्वारा फोन व पत्रों द्वारा शुभकामनाएं दी–कुछ पत्र बड़े भावुक शब्दों से ओत–प्रोत थे। मैं सभी शुभ चिन्तकों का बड़ा कृतज्ञ हूँ। मैं लगभग स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर चुका हूँ और शीघ्र ही सभा की इस कार्यक्रम की पहली बैठक में पारित प्रस्तावों व योजनाओं के अनुसार कार्य शुरू होगा और आंचलिक समितियों की रिपोर्ट के अनुसार व उनकी सिफारिशों के अनुसार कार्य आरम्भ होगा। महामंत्री जी व कार्यकारिणी के अन्य पदाधिकारियों से विचार विमर्श इस सम्बन्ध में होता रहता है। हमें अपने गुरू स्वामी दयानन्द सरस्वती के आर्यसमाज गठन मिशन को हिमाचल प्रदेश में पूरा करने का धर्म हर स्थिति में निभाना है। आर्य प्रतिनिधि सभा के अपने इस कार्यकाल में एक बहुत बड़ा धर्म "हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में" स्वामी दयानन्द सरस्वती चेयर की स्थापना व उसे सक्रिय बनाकर, पूरा करने का प्रयास हुआ है–उपलब्धि प्राप्त हुई है। अभी बहुत कार्य हैं जिन्हें पूरा कर अपना जीवन कल्याणकारी बनाना है।

उपरोक्त विषय व अन्य केवल महत्वपूर्ण विषयों पर अप्रैल के अन्तिम सप्ताह में गहन विचार के लिए सभा की बैठक का आयोजन होगा। डेढ़ दिन आप का लेना चाहूंगा–शनिवार सायंकाल व रविवार प्रातः से दो बजे तक १ एजैण्डा भेजा जाएगा कृपया पूरी तैयारी के साथ आएं–विचार दें ताकि निर्णय के पश्चात कार्य रूप दिया जा सके। एजैण्डा के लिए आईटम अपनी ओर से, यदि कोई हो, कृपया महामंत्री जी को अप्रैल के पहले सप्ताह तक पहुंचा दें। यह एक महत्वपूर्ण बैठक होगी। अपने विचार बैठक में दें। थोड़े समय में ठोस विचार। आपने व सभी सदस्यों ने आना अवश्य है। यह निमंत्रण व आर्य प्रतिनिधि सभा की और से निर्देश प्यार भरा।

आपके ठहरने व खाने पीने का अच्छा प्रबन्ध होगा। इसे मैं स्वयं देखूँगा। पूर्व सूचना देना आवश्यक होगा।

धन्यवाद व आदर सहित

भवदीय
सत्यप्रकाश मेहन्दीरत्ता

गुरूवर स्वामी सर्वानन्द महाराज की
११३वीं जन्म स्मृति पर

''निराले सन्त''

♦शास्त्री विद्यानिधि आर्य, आर्य निवास ममेल,
तह. करसोग, जिला मण्डी (हि. प्र.)

तख्तपोष पर ईंट सिरहाना, ऊपर चिटाई डाले।
सुखासन में विराजे यतिवर, काली कम्बली वाले।
देखे–सुने न कोई जगत् में, ऐसे सन्त निराले।

कषाय वस्त्र, हाथ में लाठी, पांव में खडाऊं डाले।
गौवें ही था धन जिनका, गौओं के थे वे रखवाले।
देखे सुनें न कोई जगत् में, ऐसे सन्त निराले।।

शान्त स्वभाव, प्रभावशाली व्यक्तित्व,
सन्त शिरोमणि प्यारे।
वाग्मिता में लब्ध कीर्ति, मठ में थे डेरे डाले।
देखे सुने न कोई जगत् में, ऐसे सन्त निराले।।

माँ की ममता, प्यार पिता का,
गुरू, ज्ञान की गंगा बहाने वाले।
प्रथम दर्शन पर ही हो गये, लाखों तेरे चाहने वाले।
देखे सुने न कोई जगत् में,ऐसे सन्त निराले।।

सन्त समागम दुर्लभ है, कहते हैं कहने वाले।
तेरा सान्निध्य उन्हीं को मिला, जो थे किस्मत वाले।
देखे सुने न कोई जगत् में,ऐसे सन्त निराले।।

लोभ–मोह तुझे लुभा न सके,
निष्काम–भाव कर्म करने वाले।
बस गए थे तुम हर जन–मानस में,
वाह! अरे सन्त निराले।
देखे सुने न कोई जगत् में,ऐसे सन्त निराले।।

दर पे तेरे जो भी आये, भर–भर ले गए थैल।
मालो–माल हो गए गुरूवर, तेरे दर्शन करने वाले।
देखे सुने न कोई जगत् में, ऐसे सन्त निराले।।

पर पीड़ा जो स्व पीड़ा जानें, ऐसे लाखों में तुम अकेले।
विरले ही तुम्हें हैं जान पाये, इसे ही जानें संयोग के मेले।
देखे सुनें न कोई जगत् में, ऐसे सन्त निराले।।

जाने वाले चले गए, ज्ञान का दीप जला, कर उजाले।
युगों–युग याद करेंगे वैरागी, तुम्हें तेरे चाहने वाले।
देखे सुनें न कोई जगत् में, ऐसे सन्त निराले।।

समर्पण :

क्या करूं चरणों में अर्पित, पूजनीय गुरूवर मेरे।
नमन की भेंट लेकर, मैं आऊं सांझ सबेरे।।

संघ समाचार

♦हिमाचल पैंशनर कल्याण संघ का १३वां स्थापना दिवस दिव्य मानव ज्योति अनाथालय डैहर में हर्षोल्लास से श्री बी. डी. शर्मा की अध्यक्षता में मनाया गया। संगठन को मजबूत बनाने तथा पैंशनरों की समस्याओं को हल कराने हेतु अपने विचार रखे। द्विवार्षिक चुनाव ऊना में करने की घोषणा की गई। सभी जिलों के चुनाव सम्बंधी विस्तृत प्रपत्र भी जारी किया गया। अप्रैल के मासान्त तक सभी खण्डों के चुनाव करा लिये जाएंगे। डैहर दिव्य मानव ज्योति अनाथालय के अध्यक्ष श्री सत्य प्रकाश शर्मा और उनकी समस्त कार्यकारिणी ने पैंशनरों के खान–पान की समुचित व्यवस्था की थी। एक हजार से अधिक सभी बुजुर्गों ने अनाथालय की गतिविधियों की भरपूर प्रशंसा की। अनाथालय अध्यक्ष श्री सत्य प्रकाश तथा पैंशनरों की सुन्दरनगर ईकाई के अध्यक्ष श्री मोहन सिंह ने प्रदेश के कोने–कोने से पधारे बुजुर्ग पैंशनरों का स्वागत किया।

♦प्रदेशाध्यक्ष श्री बी. डी. शर्मा ने अधिकाधिक सदस्यता बनाने तथा संगठन को मजबूत करने पर बल दिया। मंच संचालन प्रदेश महामंत्री श्री टी. डी. ठाकुर ने किया। महिलाओं में प्रदेश वरिष्ठ उपाध्यक्षा श्रीमती जावित्री ठाकुर और उपाध्यक्ष तथा सुन्दरनगर नगर परिषद् की अध्यक्षा श्रीमती गिरिजा गौतम ने अपने क्रांतिकारी विचारों से सभी को प्रभावित किया। सभी जिला प्रधानों एवं अन्य वक्ताओं ने मुख्यमन्त्री श्री वीरभद्र सिंह से बुजुर्ग पैंशनरों को पंजाब आधार पर सभी वित्तीय सुविधाओं का लाभ लोक सभा चुनावों से पूर्व देने का आग्रह किया। वक्ताओं ने मुख्यमन्त्री से पैंशनरों के चिकित्सा बिलों के निपटारे हेतु समुचित बजट स्वीकृत करने का भी अनुरोध किया ताकि वृद्ध पैंशनरों को धन के अभाव के कारण इलाज न कर पाने पर असमय शमशान भूमि न जाना पड़े।

लघु कविता

आर्य समाज खरीड़ी में,
आया वार्षिक महोत्सव, साल के बाद,
नई उमंगे, नई तरंगे और नई आशाओं के साथ
देता है सन्देश समाज को,
एक बार फिर बन जाएं हम,
धीर–वीर और आर्यजन,
असत्य को छोड़, सत्य को अपनाकर,
बुराई को त्याग, अच्छाई को अपनाकर,
अन्धविश्वासों और पाखण्डों को दूर भगाकर,
अपने समाज को सही दिशा दिखाकर
अपने देश को बनाएं, भ्रष्टाचार मुक्त,
तभी हम कहलाएंगे सच्चे भारत माँ के सुपुत्र।

–रमा शर्मा, खरीहड़ी, सुन्दरनगर

ऋग्वेद यजुर्वेद

स्वामी सर्वानन्द

महर्षि दयानन्द

स्वामी स्वतन्त्रानन्द

आर्यों के तीर्थ

दयानन्द मठ, दीनानगर

जिला गुरदासपुर (पंजाब) को स्थापित हुए 75 वर्ष होने पर

हीरक जयन्ती समारोह

18, 19, 20 अक्टूबर, 2013

को बड़ी धूम–धाम एवं हर्षोल्लास से मनाया जायेगा।

जिसमें आप सब महानुभाव सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक : स्वामी सदानन्द सरस्वती

अध्यक्ष दयानन्द मठ, दीनानगर एवं समस्त परामर्श समिति

सम्पर्क : 01875–220110, 094782–56272, 94172–20110

सामवेद अथर्ववेद

साभार

श्री चन्द्र सिंह शास्त्री, गांव नगलाई डाक. रूमणी, तह.थुनाग, जिला मण्डी ने ₹५००, श्रीमति वन्ती गुप्ता एवं श्री सोहन लाल गुप्ता पूर्व अधीक्षक ग्रेड–१ डाक. पुराना बाजार, तह. सुन्दरनगर ने ₹५००, श्री मिलखी राम चन्देल गांव व डाक. मौवीसेरी तह.चच्योट जिला मण्डी ने ₹२००, श्री मनी राम चौहान, पूर्व एक्स.ई.एन. गांव भौर, डाक. कनैड तह. सुन्दरनगर ने ₹२००, श्री के. सी. रूद्र, गांव सिद्धवा, डा. बंजार, जिला कुल्लू ने ₹२००,श्रीमति रत्नी गुप्ता पत्नी श्री बृजलाल गुप्ता गांव व डाक. गोयला, तह. कसौली जिला सोलन ने ₹१०१, श्री गिरधारी लाल वर्मा, गांव व डाक. सुक्कीवाई, तह. चच्योट, जिला मण्डी ने ₹१००, श्री टाईम चन्द गांव व डाक. मौवी सेरी, तह. चच्योट जिला मण्डी ने ₹१०० की सहयोग राशि भेंट की। आर्य वन्दना परिवार इनका धन्यवाद व्यक्त करता है।

इस पत्रिका हेतु अपने ईष्ट मित्रों और शुभचिन्तकों को भी सदस्य बनायें। प्रदेश की आर्य समाजों और आप के पावन सहयोग से ही आर्य वन्दना का अंक हर मास प्रकाशित हो रहा है।

आर्य वन्दना शुल्क : वार्षिक शुल्क : ₹ 100, द्विवार्षिक शुल्क : ₹ 160, त्रैवार्षिक शुल्क : ₹ 200

१. आर्य समाज, महर्षि दयानन्द मार्ग, सुन्दरनगर, (खरीहड़ी) (हि० प्र०)

२. उप–कार्यालय, हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य समाज, मण्डी (हि. प्र.)

आप अपने लेख निम्न पते पर ई–मेल द्वारा भी भेज सकते हैं : arya.bandana@gmail.com

वैचारिक क्रांति के लिए महर्षि दयानन्द की अमर रचना सत्यार्थ प्रकाश अवश्य पढ़ें।

Arya Vandana/Sml/L33/Sm/64/2000 Postal Registered No. : MANDI (HP)/21/2013-15
Valid upto 31-12-2015

बुक पोस्ट

सेवा में

(बोध कथा)

''निष्कामी दयानंद''

ज्ञान गोष्ठी हो रही थी। गोष्ठी में स्वामी दयानंद और उनके कुछ भक्त बैठे हुए थे। उनमें से एक ने सकुचाते हुए कहा–'स्वामी जी, मैं जो कुछ पूछना चाहता हूं, वह आपके निजी जीवन से संबंध रखता है, इसलिए पूछते हुए संकोच हो रहा है।' स्वामी जी बोले, 'आचार्य और शिष्य का संबंध आवरण रहित होता है। आप यह तो भलीभांति जानते होंगे कि मशाल के साथ–साथ अंधेरा भी रहता है–भले ही मात्रा में नगण्य क्यों न हो। इसलिए संकोच रहित होकर आपको सवाल पूछना चाहिए।'

तब उन महानुभाव ने पूछा, 'महाराज, क्या आपको 'काम' ने कभी नहीं सताया ?

प्रश्न सचमुच बड़ा बेढब था। स्वामीजी बोले, 'तुम्हारा प्रश्न सचमुच बहुत समझदारी वाला है। तुम यह जान लो कि काम मेरे नजदीक कभी नहीं आ पाया है और न ही मैंने उसे कभी देखा है। यदि जब–तब आया भी होगा, तो मेरे मस्तिष्क और हृदय के द्वारों को बंद देखकर, बाहर बैठे–बैठे उकता गया होगा। अंततः वह निराश होकर लौट गया होगा। मेरे मस्तिष्क और हृदय को वेद–भाषा आदि के लेखन और शास्त्रार्थों से फुरसत ही कहां मिलती है, जिससे वह बचे समय में किसी दूसरे कार्यों या दृश्यों को देखे, सुने और उस पर ध्यान दे। इतने में एक सज्जन ने पूछ लिया, 'महाराज, अपराध क्षमा करें। क्या आप स्वप्न में भी काम से कभी पीड़ित नहीं हुए ?' इस प्रश्न पर दयानंद ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, 'भाई जब काम को मेरे अंदर प्रवेश करने के लिए द्वार ही नहीं दिखाई दिया, तब वह क्रीड़ा भी कैसे और किससे करता ?मैं स्वप्न में भी हमेशा अपने कार्यों को ही करता हुआ पाता हूं। यह सुनकर सभी अवाक् रह गए। भला इतना उच्च जीवन कितने मानवों से सध सकेगा ? सच तो यह है कि संतों का जीवन ऐसा ही होता है। उन्हें अपने लक्ष्य के अलावा, दूसरा कोई भी कार्य सूझता ही नहीं है।

करो सम्मान नारी का

♦स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती

परीक्षा वीरता की है, करो सम्मान नारी का।
अबध्या युद्ध बेला में, हरो संकट दुलारी का।। ध्रुव।।
जननी जन्म देती है, शरीरी कष्ट सहती है,
गर्भ में पालती सबको, हृदय से प्यार करती है।
महा उपकार के बदले, करो सत्कार नारी का,
परीक्षा वीरता की है, करो सम्मान नारी का।।१।।

यही है खान मानव की, रूप है देवी माता का,
यही लक्ष्मी–भवानी है, शौर्य का रूप दुर्गा का।
यही है पार्वती प्यारी, द्रौपती जनक दुलारी का,
परीक्षा वीरता की है, करो सम्मान नारी का।।२।।

जहाँ सम्मान नारी का, विचरते देवता सारे,
वहीं सत्कार पाते हैं, शुत्र या मित्र सब प्यारे।
नहीं सम्मान हो इनका, नाश हो खेत–क्यारी का,
परीक्षा वीरता की है, करो सम्मान नारी का।।३।।

सदैव पूजनीया है, धर्म की रक्षिका पत्नी,
यही शोभा है शुभ कुल की, पोषका है ये पौरुष की।
भगिनी भार्या दुहिता, दिलाती प्यार नारी का,
परीक्षा वीरता की है, करो सम्मान नारी का।।४।।

करे दुराचार नारी से, वही राक्षस कहाता है,
अनाचारी है व्यभिचारी, वही नर नरक पाता है।
करो छेदन पतित तन को, हरे जो शील नारी का,
परीक्षा वीरता की है, करो सम्मान नारी का।।५।।

गुणी है स्नेह स्नेही की, सेविका सेव्य रोगी की,
करे श्रद्धा–धर्म धारण, पालिका बाल–वृद्धों की।
छिपा है भाव ईश्वर में, 'दिव्य' गुण माँ–कुमारी का,
परीक्षा वीरता की है, करो सम्मान नारी का।।६।।